—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

अक्टूबर, 2006 वर्ष 5 अंक 08

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2740406
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

शबेक़द्र

हमने क़ुर्आन को शबेक़द्र में उतारा है। जानते हो शबेक़द्र क्या है? शबेक़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। इस रात में फ़िरिश्ते और रुहुलअमीन आसमान से हर भलाई की बात लेकर ज़मीन की तरफ़ उतरते हैं। यह सलामती वाली रात है। यह फ़ज्र तक रहती है।

(सूरतुलक़द्र)

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

रमज़ान का महीना	सम्पादकीय	3
क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंज़ूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
तहज़ीबे अख़्लाक़	मौ०स० अबुल हसन अली हसनी	8
सीरतुन्नबी	सै० सुलैमान नदवी	11
बच्चे का संकल्प (अतुकान्त)	इदारा	14
संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	15
क्या अब इस्लाम की आवश्यकता नहीं रही?	मु० .क़ुत्ब	17
१५ अगस्त २००६	एम हसन अंसारी	20
हड़ताल	अबू मर्गूब	23
ग़मगीन हम ज़रूर है	अबू मर्गूब	25
शिक्षक दिवस २००६ पर	एम हसन अंसारी	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	27
रमज़ान के अन्तिम दस दिन	मौ० अब्दुल्ला अब्बास नदवी	28
अपने देश का इतिहास	प्रो० श्री नेत्र पांडे	29
वर्ण व्यवस्था के दोष	डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल	32
अजवाइन	इदारा	34
लेज़र फेंको	डॉ० एम०आर० जैन	35
अवध के बादशाहों की तख़्त नशीलनी	इदारा	36
रोज़ा, ज़कात और फ़ित्रा	मौ० मुजीबुल्लाह नदवी	37
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

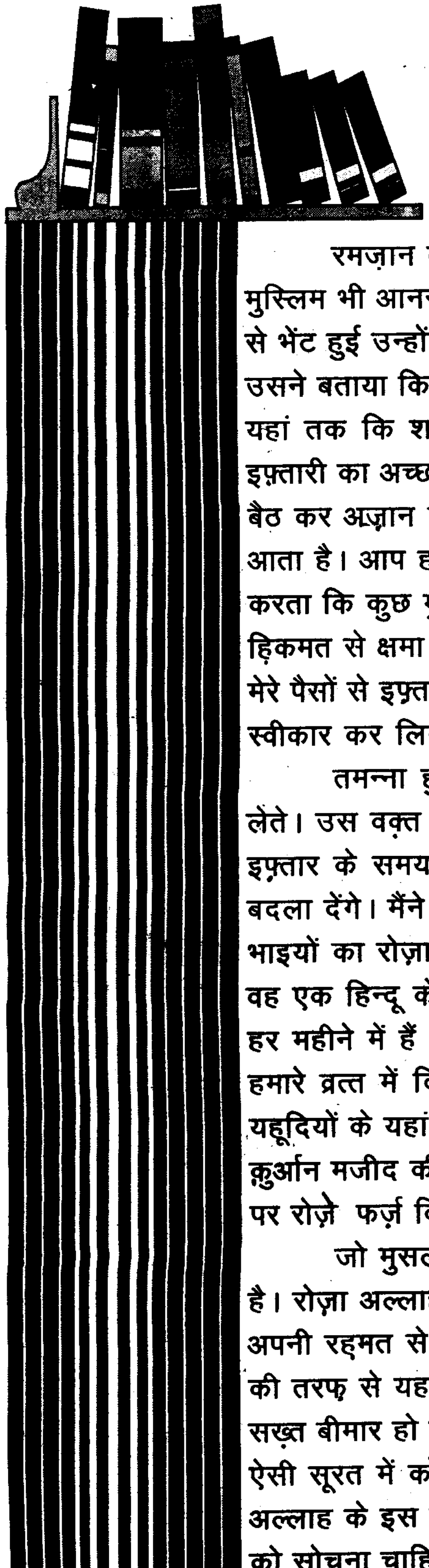

रमज़ान का महीना

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

रमज़ान के मुबारक महीने से कौन मुसलमान परिचित नहीं, मुसलमान क्या इस से तो ग़ैर मुस्लिम भी आनन्द लेते हैं। एक साल रमज़ान में मुझे दुबई जाना हुआ, गुजरात के एक हिन्दू मित्र से भेंट हुई उन्होंने मुझे इफ़्तार पर आमंत्रित किया, मैं ने आश्चर्य से पूछा तुम्हारे यहां इफ़्तार कहां? उसने बताया कि हमारी दुकान पर जो हिन्दू काम करते हैं वह और मैं दिन में कुछ खाते पीते नहीं यहां तक कि शाम तक खूब भूख भी लग जाती है और प्यास भी, फिर आप लोगों की भांति इफ़्तारी का अच्छा प्रबन्ध करते हैं, और जब १५ मिनट आप की अज़ान में रह जाते हैं तो एक साथ बैठ कर अज़ान की प्रतीक्षा करते हैं और अज़ान होते ही हम लोग इफ़्तारी खाते हैं बड़ा ही मज़ा आता है। आप हमारे साथ इफ़्तार कीजिए। मैं सोच में पड़ गया कि क्या जवाब दूं, अगर मैं मांग करता कि कुछ मुसलमानों को भी आमंत्रित कीजिए तो वह तुरन्त राज़ी हो जाते लेकिन मैंने बड़ी हिकमत से क्षमा चाह ली, मेरे दोस्त ने तुरन्त सौ दिर्हम का नोट पेश किया कि अच्छा आप आज मेरे पैसों से इफ़्तारी और खाने का प्रबन्ध कर लीजिएगा । मैं बहुत शर्मिन्दा हुआ और १०० का नोट स्वीकार कर लिया।

तमन्ना हुई कि काश यह ईमान लाकर रोज़ा रखते और इफ़्तारी का वास्तविक आनन्द लेते। उस वक़्त मुझे ह़दीस की वह बात याद आई कि रोज़ेदार को दो ख़ुशियां प्राप्त होंगी, एक इफ़्तार के समय दूसरी उस समय जब अल्लाह तआला से भेंट होगी और वह रोज़े का विशेष बदला देंगे। मैंने कई बार हिन्दू भाईयों से सुना कि आज मैं उपवास से हूं। उपवास या वृत्त हिन्दू भाइयों का रोज़ा है। मैंने एक पंडित से पूछा कि आप के यहां वृत्त कब रखा जाता है और क्या वह एक हिन्दू के लिये ज़रूरी है? पंडित जी ने बताया कि हिन्दू धर्म में उपवास बहुत से हैं और हर महीने में हैं जो रखे उसको पुन्न मिलेगा जो न रखे उस पर पाप नहीं, उन्होंने बताया कि हमारे व्रत्त में दिन में एक बार फल खा सकते हैं मगर अनाज नहीं खा सकते। ईसाइयों और यहूदियों के यहां रोज़ा, मैं पहले सुन चुका था, जैसे भी हो और जब भी हो हिन्दुओं से भी सुन कर क़ुर्आन मजीद की ख़बर कीपुष्टि (तस्दीक) हुई थी अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फर्ज़ किये गये जैसे तुम से पहले के लोगों पर फर्ज किये गये थे।" (अलबकरः १८३)

जो मुसलमान अक़्ल रखता है, दीवाना नहीं है और व्यस्क (बालिग) है उस पर रोज़ा फ़र्ज़ है। रोज़ा अल्लाह ने जब फ़र्ज़ फ़रमाया है तो रोज़े में कोताही कैसी? सिर्फ़ इस लिए कि उस ने अपनी रह्मत से फ़ौरन सज़ा का फ़ैसला न फरमाया और तुरन्त पकड़ में छूट दे दी। अगर उस की तरफ़ से यह व्यवस्था होती कि रमज़ान में दिन में खाना पानी हज़्म न होता, खाने पीने वाला सख़्त बीमार हो जाता, रमज़ान में रोज़ा न रखने वाला किसी सख़्त तकलीफ़ में फंस जाता तो क्या ऐसी सूरत में कोई रोज़ा छोड़ने की हिम्मत करता? कितनी ना शुक्री है उस इन्सान की कि जो अल्लाह के इस करम (दया) पर और निडर हो रहा है और लापरवाही से रोज़ा छोड़ रहा है। उस को सोचना चाहिए कि क्या उसे अल्लाह इस अवज्ञा पर क्षमा (मुआफ़) कर देंगे? निःसन्देह अल्लाह तआला ग़फ़ूर हैं। रहीम हैं, कृपालू है, दयालू हैं, अल्लाह तआला ने एअलान फ़रमाया है घोषणा

की है कि वह बिना तौबा मुशरिक को नहीं बख़्शेगा न ही क्षमा करेगा, और दूसरे गुनाहों में जिस गुनाह को चाहेगा बख़्श देगा, क्षमा कर देगा लेकिन कबीरा गुनाहों पर जो चेतावनियां आई हैं उन से यही ज्ञात होता है कि अगर तौबा कर के क्षमा न चाही तो कबीरा गुनाहों की सज़ा तो भुगतना ही होगी फिर कबीरा गुनाह दो तरह के हैं एक तो जैसे फर्ज नमाजें छोड़ना, रमज़ान के रोज़े छोड़ना, माल होते हुए ज़कात न अदा करना, इस्तिताअ़त (सामर्थ्य) होते हुए ह़ज न करना ऐसे गुनाह हैं जो क़ुदरत रखते हुए अदा न करें बस तौबा करें तो मुआफ़ न होंगे, इन के बदले में सज़ा भुगतना ही होगी इसी तरह ह़क़्क़ुलइबाद (बन्दों के ह़ुक़ूक़) मारने पर भी जब तक बन्दा मुआफ़ न करे तौबा से अल्लाह तआ़ला मुआफ़ (क्षमा) न फ़रमाएंगे। किसी ने (मुआज़ल्लाह) शराब पी ली या (खुदा की पनाह) सुअर खा लिया तो उम्मीद है कि सच्ची तौबा से मुआ़फ़ हो जाएगा लेकिन किसी ने किसी का माल चुरा कर या लूट कर या ग़सब कर के खा लिया तो अब जब तक माल वाले को माल वापस न कर दिया जाए या वह मुआफ़ न कर दे मुआफ़ न होगा। पस रोज़ा छोड़ने वाला तौबा करता रहे जब तक छूटे हुए रोज़े क़ज़ा न कर ले सिर्फ़ तौबा से मुआफ़ी न मिलेगी। ऐसे ही छूटी हुई नमाज़ें अदा करने ही पर छुटकारा मिलेगा। फिर किसी की रोज़ा छोड़ने की कैसे हिम्मत होती है। यह अलग बात है कि उस के लिए हमेशा का अ़ज़ाब नहीं है।

ग़ौर करने की बात है अल्लाह तआ़ला क़ुर्आन मजीद में वाज़िह तौर पर खुलकर रोज़ा रखने का ह़ुक्म दें। "तुम में से जो रमज़ान का महीना पाए वह उस के रोज़े रखे।" (अलबक़र : १८५) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने ह़ज़रत जिब्रील (अ़०) के इस प्रश्न पर कि इस्लाम क्या है बताया: इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और गवाही देना कि मुह़म्मद (सल्लल्लाहुल अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ काइम करना, माल की ज़कात अदा करना, रमज़ान के रोज़े रखना और इस्तिताअ़त (सामर्थ्य) होने पर ह़ज करना। एक और ह़दीस में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इस्लाम की बुन्याद (आधार) पांच चीज़ों पर है फिर ऊपर की पाचों बातें बयान फ़रमाईं। फिर हम रोज़ा छोड़ कर किस प्रकार के मुसलमान बनना चाहते हैं।

रोज़ों के मसाइल पर ग़ौर करें अगर कोई शख़्स बड़ा मालदार है अगर वह एक एक रोज़े के बदले हज़ार हज़ार रूपया ख़ैरात करे तो क्या उस को रोज़ा मुआ़फ़ हो जाएगा? किसी भी आ़लिम से पूछ लीजिए, हरगिज़ नहीं, उस को तो रोज़ा रखना ही होगा। रोज़े के बदले में फ़िदया वही बूढ़ा मर्द या बूढ़ी औरत दे सकती है। जिसमें बुढ़ापे के सबब रोज़ा रखने की सकत नहीं या ऐसा बीमार जो अपनी बीमारी के सबब रोज़ा न रख सके और उसकी बीमारी ऐसी हो कि अच्छे होने की उम्मीद न हो। फिर हमारा सिह़तमन्द तन्दुरुस्त (स्वास्थ) जवान रोज़ा छोड़ने की हिम्मत कैसे कर रहा है।

मैंने बहुत से ऐसे लोगों को देखा कि वह सख़्त मेह़नत भी करते और रोज़ा भी रखते, उन्होंने हिम्मत की अल्लाह न उनकी मदद की। अगर किसी भाई को रमज़ान में सख़्त मेह़नत से चारा न हो और वह रोज़ा रखने की हिम्मत न कर पा रहा हो तो मन मानी कर के अपनी तबाही का प्रबन्ध न करे किसी आ़लिम से मश्वरा करे। हो सकता है आ़लिम उसकी मजबूरी पर ग़ौर कर के मश्वरा दे कि इन दिनों में रोज़ा छोड़ दो लेकिन क़ज़ा रोज़ा रखने का पक्का इरादा करो और अवसर मिलते ही छूटे रोज़े पूरे कर लेना चाहिए।

मुसलमान को तो चाहिए कि वह तमाम अह़काम (आदेशों) पर इस नीयत से अ़मल करे कि यह अल्लाह का ह़ुक्म है और बस, लेकिन अगर किसी ह़ुक्म की मस्लह़त मअ़लूम हो जाए तो अच्छी ही बात है। इस लिहाज़ से रोज़ा ऐसी इबादत है जिस से ग़रीब लोगों की भूख का इह़सास

(शेष पृष्ठ १४ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मंजूर नोमानी

वही सारी काइनात का बादशाह है, सब कुछ सिर्फ़ उसी के इख़तियार में है

यह भी कुरआने–मजीद के उन मज़ामीन में से है जिनको इतनी कसरत से बयान किया गया है कि शुमार भी नहीं किया जा सकता– सिर्फ नमूने के तौर पर ज़ैल (नीचे) की चंद आयतें पढ़ लीजिए! इर्शाद है:–

तर्जमा:– कहो! ऐ अल्लाह सारे मुल्क और सारी काईनात के मालिक! तू ही है, जिस को चाहे हुकूमत व बादशाहत दे, और जिससे चाहे छीन ले, जिसे तू चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे रुसवाई और ज़िल्लत दे; हर खैर और हर क़िस्म की भलाई तेरे ही कब्ज़े और इख़्तियार में है (और सिर्फ़ खैर और भलाई ही नहीं बल्कि) हर चीज़ (भली हो या बुरी) तेरी कुदरत में है! (आलि इम्रान : २६)

और सूरए तौबा में फर्माया:–

तर्जमा: बेशक अल्लाह और सिर्फ अल्लाह ही की फर्मारवाई और बादशाहत है, आस्मान–व–जमीन में। वही जिंदगी देता है वही मारता है। और उसके सिवा कोई भी तुम्हारा हिमायती और मददगार नहीं है। (तौब: ११६)

और सुरए..माइदा में इर्शाद फर्माया:

तर्जमा– आस्मानो–जमीन और उनके अन्दर की हर चीज की बादशाहत और हुकूमत अल्लाह ही के लिये है सब पर उसी की फर्मारवाई है; और हर चीज़ पर उसकी कुदरत है।

और सूरएशूरा में अल्लाह तआला की इसी हमागीर (सर्व–व्यापी) बादशाहत और कुदरत को बयान करते हुये इर्शाद फ़र्माया गया:–

तर्जमा:– अल्लाह ही की हुकूमत और उसी का राज है आस्मानों और ज़मीन में, पैदा करता है, जो वह चाहता है। जिसे चाहता है बेटियां देता है और जिसे चाहता है बेटे अता करता है। या इन दोनों सिन्फ़ों (लिंगों) (नर–मादाओं) को जमा कर देता है, और रखता है जिसकोा चाहे बे औलाद। वह सब कुछ जानने वाला और पूरी कुदरत वाला है। (शूरा: ४६, ५०)

और सूरए–मुअमिनून में फ़र्माया:–

तर्जमा:– सो आलीशान और बरतर है वह हस्ती जो हक़ीक़ी बादशाह है, उसके सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लायक नहीं, अर्श–अज़ीम का मालिक है। (मुअ्मिनून:११६)

और सूरए फ़ातिर में अल्लाह–तआला की शान और बन्दों पर उसके इन्आमात तफसील से बयान फर्माने के बाद इर्शाद फ़र्माया:–

तर्जमा:– यह है अल्लाह तुम्हारा पर्वरदिगार, सिर्फ उसी की बादशाही और उसी का इख़्तियार है। और उसके सिवा तुम जिन से दुआएं करते हो और अपनी हाजतों में जिन को पुकारते हो वह तो खजूर की गुठली के छिलके जैसी किसी हकीर से हकीर (छोटी से छोटी) चीज़ के भी मालिक और मुखतार नहीं। अगर तुम उन से दुआ करो तो वे तुम्हारी दुआ न सुनें और अगर सुन भी लें तो कबूल न कर सकें (यानी तुम्हारा काम न कर सकें) और क़ियामत के दिन वे इन्कार करेंगे तुम्हारे इस शिर्क से। और यह बातें नहीं बतलायेगा तुमको कोई अ़लीम–व–ख़बीर (जानने वाला और ख़बर रखने वाले) की तरह। ऐ लोगो! तुम सब अल्लाह के मोहताज हो, और सिर्फ अल्लाह ही है जो ग़नी (मालदार–धनाढय) और सबसे मुस्तग्नी (बेनियाज़) है और वही लायके–हम्द (तारीफ के लायक) है (उसे सब कुछ इख़तियार है) अगर चाहे तो तुम्हें एक दम फ़ना कर दे और नई मखलूक ले आये। और अल्लाह के लिये यह कुछ मुशकिल बात नहीं। (फातिर : १३–१७)

और सूरए–फ़ुर्क़ान में अल्लाह की लाशरीक हुकूमत–व–बादशाही, और औलाद से भी उसकी पाकी बयान करते हुये इर्शाद फ़र्माया गया:–

तर्जमा:– वह अल्लाह जिसकी बादशाही और जिसका राज है आस्मानो–ज़मीन में, और उसने किसी को अपनी औलाद नहीं बनाया, और कोई नहीं उसका शरीक हुकूमत और बादशाहत में। (फुर्कान :२)

> क़ुर्आन की तिलावत रोज़ करो। बिना समझे भी क़ुर्आन की तिलावत में सवाब है नमाज़ में तो क़ुर्आन पढ़ना फ़र्ज़ है समझें या न समझें।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

बिद्अ़त गैर मक़बूल है

हज़रत आयशाः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसने हमारे काम (यानी दीन में) कोई नयी बात पैदा की, जो उसमें नहीं है, तो वह रद्द है। (बुखारी मुस्लिम)

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि जिसने कोई ऐसा अमल किया जिस पर हमारा हुक्म नहीं है तो वह रद्द है।

बिद्अ़त गुमराही है

हज़रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) खुतबा फरमा रहे थे।

फ़रमाते फरमाते आपकी आवाज़ तेज़ हो गयी और आँखें सुर्ख हो गयीं और आपका गुस्सः ज़ियादः हो गया। मालूम होता था गोया आप एक ऐसे लश्कर से डरा रहे हैं जो सुबह या शाम हमला करने वाला है। और आपने फ़रमाया कि मेरी पैदाइश और क़ियामत इस तरह क़रीब है जिस तरह कलिमः और बीच की उंगली। और फ़रमाते थे बेहतर कलाम अल्लाह की किताब है और बेहतर तरीका मुहम्मद का है और सब से बुरे काम दीन में नई बातें हैं और हर बिदअत गुमराही फरमाते थे मैं हर मोमिन की उसके नफ्स से ज़ियादः मुस्तहिक़ हूं अगर किसी शख्स ने माल छोड़ा तो उसके घर वालों के लिए है और जिसने कर्ज या बच्चे छोड़े तो उसकी ज़िम्मेदारी मुझ पर है। (मुस्लिम)

अच्छी बात की इब्तिदा करने वालों को तमाम अ़मल करने वालों का सवाब मिलेगा

हज़रत जरीर (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि दोपहर के वक़्त हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे थे, कुछ लोग नंगे बदन, गले में कम्बल डाले हुए और तलवारों को हमायल किये हुए आये, उनमें अक्सर मुज़र के क़बीलः से थे। उनको फ़ाक़ःकश देखकर हुज़ूर (सल्ल०) का चेहरामुबारक सुर्ख़ हो गया। अन्दर तशरीफ़ ले गये, फिर बाहर आये और हज़रत बिलाल (र०) को अज़ान का हुक्म दिया। फिर नमाज़ पढ़ी और खुतबा में फ़रमाया–

अनुवाद– ऐ लोगो, अपने परवरदिगार से डरो जिसने तुमको एक जानदार से पैदा किया और उस जानदार से उसका जोड़ा पैदा किया। और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैलायीं, और तुम अल्लाह से डरो जिसके नाम से एक दूसरे से सवाल करते हो और क़राबत का भी लिहाज़ करो। बिलयक़ीन अल्लाह तआ़ला तुम्हारे निगिहबान है। (अन्निसाः१)

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और नफ्स देखे कि उस ने कल के लिय क्या भेजा है। (हश्र : १८)

किसी ने सदक़ः में दीनार, किसी ने दरहम, किसी ने कपड़े, किसी ने गेहूँ के साअ़ और खजूर के साअ़ दिये। आपने फ़रमाया सदक़ः दो, अगरचि खजूर का एक टुकड़ा ही हो। एक अन्सारी एक थैली लाये। वह इतनी भारी थी कि क़रीब था कि वह थक जायें, बल्कि थक गये थे। फिर पै दर पै लोगों ने लाना शुरू किया। मैंने देखा कि खाने और कपड़े के तूदे लग गये थे। उस वक़्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) का चेहरे मुबारक चकमरहा था और सुर्ख हो रहा था, गोया सोना है। आपने फरमाया, जिसने इस्लाम की अच्छी राह निकाली तो निकालने वाले को अज्र मिलेगा, और जो उस पर अमल करेगा उसका अज्र (भी नेक राह निकालने वाले को) मिलेगा, और अमल करने वाले के अज्र में कोई कमी न होगी। इसी तरह अगर इस्लाम में कोई बुरी राह निकालेगा तो उस पर गुनाह होगा और उस पर अमल करने वाले का गुनाह (भी उस बुरी राह निकालने वाले को) होगा, और अमल करने वाले के गुनाह में कोई कमी वाक़िअ़ न होगी (मुस्लिम)

बुरी बात का वबाल पहले पहल करने वाले की गर्दन पर होगा

हज़रत इब्नि मसऊद (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया कि जो कोई जुल्मन क़त्ल किया जायेगा तो उसका खून आदम के पहले बेटे क़ाबील पर होगा इसलिए कि क़त्ल का तरीक़ा उसी ने ईजाद किया। (बुखारी–मुस्लिम)

नेक बात पर आमादः करने का अज्र

हज़रत अबू मस्ऊद अन्सारी (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, जिसने किसी को नेक बात पर आमादः किया तो उसके लिए उतना ही अज्र है जितना करने वाले को मिलेगा। (मुस्लिम)

हिदायत की तरफ दावत का सवाब

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जिसने किसी को हिदायत की तरफ बुलाया तो उसको अमल करने वाले की तरह अज्र मिलेगा, और उसके अज्र में कोई कमी न होगी। और जिसने गुमराही की तरफ बुलाया तो उस पर ऐसा ही गुनाह है जैसा करने वाले पर, और उस (गुनाह करने वाले) के गुनाह में कोई कमी न होगी। (मुस्लिम)

अपने जरीये से किसी के हिदायत पाने की फजीलत

हज़रत सहल बिन सअ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने खैबर के दिन फरमाया, यह निशान कल मैं ऐसे आदमी को दूंगा जिसके हाथ पर अल्लाह फतिह देगा और वह अल्लाह और उसके रसूल को चाहता है। और अल्लाह और उसका रसूल उसको चाहते है। लोगों ने इसी बात पर चर्चा करते हुए रात गुजार दी कि देखें किसको निशान दिया जाता है। लोग सुबह ही सुबह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास इस उम्मीद पर आये कि निशान उनको दिया जाये। आपने फरमाया अली (र०) बिन अबी तालिब कहाँ हैं। लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह, उनकी आँखें आशोब कर आयीं। आपने फ़रमाया, उनको बुला लाओ। लोग उनको लायें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना लुआब दिहन उनकी आँखों में लगा दिय। लगाते ही उनकी आँखें अच्छी हो गईं, गोया कभी दर्द ही न था। आपने उनको निशान दिया। हज़रत अली (र०) ने कहा, या रसूलल्लाह! क्या मैं उनसे जंग करता रहूं ता वक्ते कि वह इस्लाम ले आयें। आपने फरमाया, बराबर चलते रहो, यहां तक कि उनके मैदान में उतर पड़ो और उनको इस्लाम की तरफ बुलाओ। और जो उन पर अल्लाह का हक वाजिब है उसकी खबर दो। खुदा की कसम अल्लाह तआला अगर एक आदमी को भी तुम्हारे जरीये हिदायत देगा, वह तुम्हारे लिए सुर्ख ऊँटों से बेहतर होगा। (बुख़ारी–मुस्लिम)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का रहनुमाई फरमाना

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि क़बीलः अस्लम का एक नवजवान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहा कि मैं जिहाद करना चाहता हूं मगर मेरे पास सामान नहीं है। आप ने फरमाया फुलां ने सामान किया था मगर वह बीमार हो गया है उसके पास जाओ। वह लड़का उनके पास गया और कहा कि रसूलुल्लल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं कि जो सामान लड़ाई के लिये तुमने मुहय्या किया था वह मुझे दे दो। उन्होंने अपने घर वालों से कहा कि जो कुछ मैं ने सामान किया था वह इनको दे दो। कुछ बाकी न रखना। तुम्हारे लिये इसमें बरकत होगी। (मुस्लिम)

लेखकों से अनुरोध

कृपया स्पष्ट तथा सरल लिखिये। आपका जो लेख २० तारीख़ के पश्चात पहुचेगा वह अगले महीने की २० तारीख़ को कम्पोज़िंग के लिये भेजा जायेगा। यदि आप का लेख किसी महीने से सम्बन्धित हो तो आप अपना लेख सम्बन्धित महीने से १५ दिन पहले सम्पादक को पहुंचाइये।

(पृष्ठ १० का शेष)

कि सहाबा ऐसे लोगों को अपनी तरफ मुतवज्जे कर लेते। आप फरमाते थे, तुम किसी जरूरतमन्द को पाओ तो उसकी मदद करो। आप तारीफ उसी आदमी की कबूल फरमाते जो एतदाल की हद में रहता। किसी की बात के दौरान कलाम न फरमाते और उसकी बात कभी न काटते। हाँ अगर वह हद से बढ़ने लगता तो उसे मना फरमा देते या मजलिस से उठकर उसकी बात काट देते थे।

आप सबसे ज्यादा फराखदिल, नर्म तबीअ़त और मामलात में बहुत ही करीम थे। जो पहली बार आप को देखता वह मरऊब हो जाता। आप की सुहबत में रहता और जान पहिचान हासिल होती तो आप का फरेफता और दिलदादा हो जाता। आप का ज़िक्रे खैर करने वाला कहता है कि न आपसे पहले मैंने आप जैसा कोई शख्स देखा न आप के बाद।"

तहज़ीबे अख़लाक और नफ़्स की पाकी

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

अल्लाह तआला ने बेसते मोहम्मदी के बुनियादी मक़ासिद कुरआन पाक की कई आयतों में ज़िक्र फरमाये हैं। इरशाद होता है, "जिस तरह हमने तुम्हीं में से एक रसूल भेजा है, जो तुमको हमारी आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते और तुम्हें पाक बनाते और किताब और दानाई सिखाते हैं और ऐसी बातें बताते हैं, जो तुम पहले नहीं जानते थे।" (सूरः बकराः १५१) और दूसरी जगह इरशाद होता है, खुदा ने मोमिनों पर बड़ा एहसान किया है कि उनमें उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजा जो उनको खुदा की आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते और उनको पाक करते और खुदा की किताब और दानाई सिखाते हैं और पहले तो यह लोग बड़ी गुमराही में थे।" (सूरः आले इमरानः १६४) एक और जगह इरशाद होता है, "वही तो है जिसने अनपढ़ों में उन्हीं में से पैग़म्बर बनाकर भेजा जो उनके सामने उसकी आयतें पढ़ते और उनको पाक करते और खुदा की किताब और दानाई सिखाते हैं, और इससे पहले तो यह लोग सरीह गुमराही में थे, " (सूरः जुमाः२)

तहजीबे, अखलाक और नफ़्स की पाकी अल्लाह के रसूल स० की बेसत का एक अहम मकसद है। कुरआन का तर्ज बयान यह बताता है कि हिकमत से मुराद बलन्द अखलाक और इस्लामी आदाब ही है। कुरआन में आता है, "(ऐ पैग़म्बर) यह उन (हिदायतों) में से हैं जो खुदा ने दानाई की बातें तुम्हारी तरफ वही की हैं। (सूरः असरा ३६) और हजरत लुकमान की अखलाकी तालीमात के जिक्र से पहले इरशाद है, "और हमने लुकमान को दानाई बखशी कि खुदा का शुक्र करो और जो शख्स शुक्र करता है तो अपने ही फायदे के लिए शुक्र करता है, और जो नाशुक्री करता है तो खुदा भी बेपरवा और सजावारे हम्द व सना है।" (सूरः लुकमान १२)

और खुदा की राह में एहसान जताये बग़ैर खर्च करने और गरीबी व तंग दस्ती से न डरने और अल्लाह पर भरोसा करने की तालीम के बाद इरशाद होता है, "वह जिसको चाहता है दानाई बख्शता है, और जिसको दानाई मिली, बेशक उसको बड़ी नेमत मिली, और नसीहत तो वही लोग कबूल करते हैं जो अक्लमन्द हैं।" (सूरः बकरः २६६)

हदीस में आता हैं कि आप ने फरमाया "मेरी बेसत ही इस लिए हुई कि मैं मकारिमे अखलाक को तकमील तक पहुंचाऊँ।" आप के अखलाक के बारे में अल्लाह तआला का इरशद है, "और अखलाक तुम्हारे बहुत आली हैं– (सूरः कलम–४)

हजरत आयशा रज़ी० से आप के अखलाक के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमाया, "आपके अखलाक मालूम करना हो तो कुरआन देखो।"

यह हिकमत और नफ़्स की पाकी अल्लाह के रसूल स० की सुहबत और हमनशीनी का नतीजा थी। आपकी तरबियतगाह में एक ऐसी नस्ल परवान चढ़ी जो आला अखलाक की हामिल और बुराइयों से महफ़ूज़ थी। कुरआन मजीद में आता है, "और जान रखो कि तुम में खुदा के पैग़म्बर हैं, अगर बहुत सी बातों में वह तुम्हारा कहा मान लिया करें तो तुम मुशकिल में पड़ जाओ लेकिन खुदा ने तुमको ईमान अजीज बना दिया, और उसको तुम्हारे दिलों में सजा दिया, और कुफ्र और गुनाह और नाफरमानी से तुमको बेजार कर दिया, यही लोग हिदायत की राह पर है....खुदा के फजल और एहसान से, और खुदा जानने वाला और हिकमत वाला है। (सूरः हुजुरात ७८) अल्लाह के रसूल स० ने फ़रमाया, "सब से अच्छे लोग मेरे दौर के लोग हैं।" हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजी० सहाबा का ज़िक्र इस तरह करते हैं "दिल के पाक, इल्म के गहरे, तकल्लुफ़ात से बरी।"

जब सुहबते नबवी का यह सिलसिला टूट गया और अल्लाह के रसूल स० ने इस दुनिया से रेहलत फरमाई तो कुरआन, हदीस और सीरत इस खला को पुर करते रहे। लेकिन मुख्तलिफ सियासी, अखलाकी और मआशी अवामिल के असर से हदीस की तदरीस व तफहीम और सीरत तारीखी और इल्मी बहसों में महदूद होकर रह गई। मगर इसके बावजूद हदीस व सीरत तहजीबे, अखलाक और

नफ़्स की पाकी का सबसे ताकतवर और बरतने में सबसे आसान जरिया है।

हदीस की किताबों में जो कुछ है वह दो किस्म का है– एक का तअल्लुक आमाल, उनकी शक्लों और महसूस अहकाम जैसे कयाम, रुकू, सज्दा, तिलावत व तस्बीह, दुआ व अज़कार दावत व तबलीग जिहाद व गजवात, सुलह व जंग, दोस्त व दुश्मन के साथ मामला और दूसरे अहकाम व मसायल से है, और दूसरे का तअल्लुक उन बातिनी कैफियात से है जो इन आमाल की अदायगी के साथ पाई जाती है। जैसे इखलास, सब्र, ईसार व सखावत, अदब व हया, खुशू व खुजू, दुआ के वक्त दिल शिकस्तगी, दुनिया पर आखिरत को तरजीह, अल्लाह की रज़ा और उसके दीदार का शौक, मखलूक पर रहमत व शफ़कत, कमजोरों के साथ हमदर्दी, एहसास की लताफत जज़बात की पाकीजगी, तवाजों व खाकसारी, शुजाअत व बहादुरी, एहसान व नेकी और शराफत, बुरा चाहने वालों के साथ दरगुजर, कता तअल्लुक करने वाले के साथ सिल–ए–रहिमी, और न देने वाले के साथ अता व बखशिश का मामला जो नमूनों और मिसालों के बगैर समझ में नहीं आतीं। इसलिए हम यहां अल्लाह के रसूल स० के जामे अवसाफे करीमा जो उन हजरात के बयान किये हुए हैं जो आप से ज्यादा करीब और आपकी खलवत व जलवत की जिन्दगी से अच्छी तरह वाकिफ थे, यहां जिक्र करते हैं।

अल्लाह के रसूल का जामे व बलीग वस्फ

अल्लाह के रसूल स० के जामे व बलीग अवसाफ से मुतअल्लिक हम यहां सिर्फ दो शहादतें नक़्ल करते हैं:– एक हिन्द बिन अबी हाला की (जो हजरत खदीजा के लड़के और हजरत हसन व हुसैन रजी० के मामू है) और दूसरी हजरत अली बिन अबीतालिब की। हिन्द बिन अबी हाला कहते हैं :–

अल्लाह के रसूल स० हर वक्त आखिरत की फिक्र में और सोच में रहते। इसका एक सिलसिला कायम था कि किसी वक्त आपको चैन नहीं होता था। अक्सर देर तक खामोश रहते। बिना जरूरत न बोलते। बात–चीत शुरू करते तो जबान से अच्छी तरह अल्फाज अदा फरमाते। और इसी तरह बात खत्म करते। आपकी बातचीत और बयान बहुत साफ, वाजेह और दोटुक होता, न यह बहुत तवील होता न बहुत मुख्तसर। आप नर्म मेजाज और नर्म गुफतार थे। कड़वा खट्टा कहने वाले और बेमुरौवत न थे। न किसी की एहानत करते थे न अपने लिए एहानत पसन्द करते थे। नेमत की बड़ी कदर करते थे और उसको बहुत ज्यादा जानते भले ही वह कम हो और उसकी बुराई न फरमाते, खाने पीने की चीज़ों की न बुराई करते न तारीफ। दुनिया और दुनिया से मुतअल्लिक जो भी चीज़ होती उस पर आप को कभी गुस्ससा न आता। लेकिन जब खुदा के किसी हक़ को पामाल किया जाता तो उस वक़्त आप के जलाल के सामने कोई चीज़ ठहर न सकती थी, यहां तक कि आप उसका बदला न ले लेते। आपको अपनी जात के लिए गुस्सा न आता न उसके लिए बदला लेते। जब इशारा फरमाते तो पूरे हाथ के साथ इशारा फरमाते जब किसी बात पर तअज्जुब करते तो उसको पलट देते। बात चीत करते वक्त दाहिने हाथ की हथेली को बायें के अंगूठे से मिलाते। गुस्सा और नागवारी की बात होती तो चेहरा उस तरफ से बिल्कुल फेर लेते और एराज़ फरमाते। खुश होते तो नज़रें झुका लेते। आपका हंसना ज्यादातर तबस्सुम या जिससे सिर्फ आपके दांत जो बारिश के ओलों की तरह पाक व साफ थे, ज़ाहिर होते।''

और हज़रत अली रज़ी० जो आप से बहुत करीब थे और जिन्हें वस्फ निगारी और मंज़रकशी पर सब से ज़ियादा कुदरत हासिल थी, आप स० के औसाफ इस तरह बयान करते हैं। :–

''आप कुदरती तौर पर बदकलामी, बेहयाई और बेशर्मी से दूर थे। और तकल्लुफन भी ऐसी कोई बात आप से सरज़द न होती थी। बाजारों में आप कभी आवाज़ बलन्द न फरमाते। बुराई का बदला बुराई से न देते बल्कि दरगुज़र का मामला फ़रमाते। आपने किसी पर हाथ नहीं उठाया सिवाय इसके कि अल्लाह की राह में जिहाद का मौका हो। किसी खादिम या औरत पर आपने कभी हाथ नहीं उठाया। मैंने आपको किसी जुल्म व ज़ियादती का बदला लेते हुए भी नहीं देखा जब तक कि अल्लाह तआला के हुदूद की खिलाफ वर्ज़ी न हो और उसकी हुरमत पर आंच न आये। हाँ अगर अल्लाह के किसी हुक्म को पामाल किया जाता और उसकी हुरमत पर हर्फ आता ताके आप उसके लिए सबसे ज्यादा गुस्सा होते। दो चीज़ें सामने हों तो हमेशा आसान चीज़ आप चुनते जब घर आते

तो आम इंसानों की तरह नज़र आते। अपने कपड़ों को साफ करते, बकरी का दूध दुहते और अपनी सब ज़रूरतें खुद अपने आप अन्जाम दे लेते।

अपनी ज़बान महफूज़ रखते और सिर्फ उसी चीज़ के लिए खोलते जिससे आप को कुछ सरोकार होता। लोगों की दिल दारी फरमाते और उनको मुतनफ्फिर न फरमाते। किसी कौम व बिरादरी का इज्जतदार शख्स आता तो उसके साथ इकराम का मामला फरमाते और उसे अच्छे और आला ओहदे पर मुकर्रर फरमाते। लोगों के बारे में मुहतात तबसरा फरमाते। बगैर इसके कि अपनी बशाशत और अखलाक से उनको महरूम फरमायें। अपने असहाब के हालात की बराबर खबर रखते, लोगों से लोगों के मामलात के बारे में पूछते रहते।

अच्छी बात की अच्छाई बयान फरमाते और उसको ताकत पहुंचाते, बुरी बात की बुराई करते और उसको कमजोर करते। आप का मामला एक सा और दरमियानी था। इसमें तबदीली नहीं होती थी। आप किसी बात से गफलत न फरमाते थे इस डर से कि कहीं दूसरे लोग भी गाफिल न होने लगें और उकता जायें। हर हाल और हर मौके के लिए आप के पास उस हाल के मुताबिक जरूरी सामान था। न हक के मामले में कोताही फरमाते न हद से आगे बढ़ते। आपके करीब जो लोग रहते थे, वह सब से अच्छे और चुनीदा होते थे। आपकी निगाह में सबसे अफज़ल वह था जिसकी खैरख्वाही और अखलाक आम हो सब से ज्यादा कदर उसकी थी जो गमख्वारी व हमदर्दी और दूसरों की मदद में सबसे आगे हो। खुदा का ज़िक्र करते हुए खड़े होते और खुदा का जिक्र करते हुए बैठते। जब कहीं तशरीफ ले जाते तो जहां मजलिस खत्म होती उसी जगह तशरीफ रखते और इसका हुक्म भी फरमाते। अपने हाजिरीन मजलिस और हमनशीनों में हर शख्स को पूरा हिस्सा देते आपका शरीके मजलिस यह समझता कि उससे बढ़कर आप की निगाह में कोई और नहीं है। अगर कोई शख्स आपको किसी काम से बिठा लेता या किसी ज़रूरत में आपसे बातचीत करता तो बड़े सब्र व सुकून से उस की बात सुनते, यहां तक कि वह खुद ही अपनी बात पूरी करके रुख्सत होता। अगर कोई शख्स आपसे कुछ सवाल करता और कुछ मदद चाहता तो बिना उसकी जरूरत पूरी किये वापस न फरमाते। या कम से कम नर्म व मीठे लहजे में जवाब देते। आपका अच्छा अखलाक तमाम लोगों के लिए आम था और आप उनके हक में बाप हो गये थे। तमाम लोग हक के ममले में आप की नज़र में बराबर थे। आपकी मजलिस इल्म व मारफत, हया व शर्म और सब्र व अमानतदारी की मजलिस थी। न उसमें आवाज़ें बलन्द होती थीं न किसी के ऐब बयान किये जाते थे। न किसी की इज्जत व नामूस पर हमला होता था न कमजोरियों की तशहीर की जाती थी। सब एक दूसरे पर फजीलत हासिल होती थी। इसमें लोग बड़ों का एहतराम और छोटों के साथ शफक़त का मामला करते थे। हाजतमन्द को अपने ऊपर तरजीह देते थे। मुसाफिर और नये आदमी की हिफाजत करते थे और उसका ख्याल रखते।

आप हर वक्त बशाशत और कुशादगी के साथ रहते थे। बहुत नर्म अखलाक व नर्म खू थे। न सख्त तबीयत के थे, न सख्त बात कहने के आदी। न चिल्ला कर बोलने वाले न आमियाना बात करने वाले, न किसी को ऐब लगाने वाले, न तंग दिल, जो बात आपको पसन्द न होती उसकी तरफ ध्यान न देते और जान बूझकर उससे मायूस भी न फरमाते और उसका जवाब भी न देते। तीन बातों से आपने अपने को बिल्कुल बचा रखा था। एक झगड़ा दूसरे घमंड, और तीसरे गैर ज़रूरी कसम। लोगों को भी आपने तीन बातों से बचा रखा था। न किसी की बुराई करते न उसको ऐब लगाते थे और न उसकी कमजोरियों के पीछे पड़ते थे। और सिर्फ़ वह कलाम फरमाते थे जिस पर सवाब की उम्मीद होती थी। जब आप बात करते तो मजलिस के लोग इस तरह अदब से सर झुका लेते थे कि मालूम होता कि उन सब के सरों पर चिड़ियां बैठी हैं। जब आप खामोश होते तब यह लोग बात करते। आपके सामने कभी झगड़ा न करते। आपकी मजलिस में अगर कोई आदमी बात करता तो बाकी सब लोग खामोशी से सुनते यहां तक कि वह अपनी बात खत्म कर लेता। आपके सामने हर आदमी की बात का वही दर्जा होता जो उसके पहले आदमी का होता। जिस बात पर सब लोग हंसते उस पर आप भी हंसते, जिस पर तअज्जुब का इज़हार करते उस पर आप भी तअज्जुब फरमाते। मुसाफिर और परदेसी की बेतमीजी और हर तरह के सवाल को सब्र व सुकून के साथ सुनते, यहां तक

(शेष पृष्ठ ७ पर)

पांचवीं किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाक

सय्यिद सुलैमान नदवी

अखलाक के लिये ईमान की शर्त

जब यह जाहिर हो चुका कि अखलाक की तमामतर बिना इरादा व नीयत पर है तो दिल की अन्दुरूनी हालत और कैफियत के लिए और हालत की दुरुस्ती के लिये यह एतेकाद ज़रूरी है कि कोई हस्नी है जो हमारे दिल के हर कोने को हर तरफ से झांक रही है, हम मजमा में हो या तनहाई में, अन्धेरे में हों या रौशनी में, ताहम कोई है जिसकी आँखें उसके दिल की तहको पर्दों में भी देख रही हैं। दुनिया की तमाम ताक़तें सिर्फ जिस्म पर हुक्मरां हैं मगर एक कुदरत वाला है जो दिल पर हुक्मरां है। फिर यह एतेक़ाद भी ज़रूरी है कि हमको इस हस्ती के आगे अपने तमाम कामों का जवाबदेह होना है और एक दिन आयेगा जब हमको अपने आमाल की जज़ा या सज़ा मिलेगी। जब तक यह दो विचार मन–मस्तिष्क में पैठ न बनायेंगे अच्छे आमाल का अच्छे इरादा से वजूद कतई मुहाल है। इसीलिये वही–ए–मुहम्मदी ने खुदा और कियामत पर ईमान लाना, हर नेक अमल की बुनियाद करार दी है कि बेइस के हर काम महज रिया और नुमाइश बन जाता है, फरमायाः–

"ऐ ईमान वालो! अपनी खैरातों को जताकर या सुना कर बार्बाद न करो जिस तरह वह बर्बाद करता है जो अपने माल को लोगों के दिखाने को खर्च करता है और खुदा और आखिरी दिन पर यकीन नहीं रखता।" (सूरः बकरः–२६४)

फरमायाः–

"और जो खुदा और कियामत को नहीं मानते उनके काम ऐसे हैं, जैसे मैदान में रेत, कि प्यासा उसको पानी समझे, जब वहां जाये तो उसको कुछ न पाये" (सूरः नूर–३६)

"या (खुदा और क़ियामत के) न मानने वालों के कामों की मिसाल ऐसी है कि अन्धेरे में गहरे दरिया में उसको लहर ढाँके रहे, इस लहर पर दूसरी लहर है उस पर घटा छाई है तारीकियां हैं एक पर एक, जब अपना हाथ निकाले तो सूझता नहीं और जिसको अल्लाह ने रौशनी नहीं दी उसको कहीं रौशनी नहीं" (सूरः नूर–४०)

जब तक किसी सानी, आलिमुलग़ैब, दाना–ए–राज़ और दिल की हर जुंबिश और हर हरकत से बाखबर हस्ती का और उसके सामने जवाबदेही का यकीन न होगा, दिल में इखलास (निष्ठा) और नफ्स में दुनियावी अग़राज़ से पाकी पैदा नहीं हो सकती और न निःस्वार्थ उच्च आचरण का वजूद हो सकता है।

यही वह मशाल है जो हमारी तीरः व तार ज़िन्दगी की रौशनी है। यह न हो तो हमको हर तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा नज़र आये और अपने किसी काम की कोई गायत मालूम न हो।

ग़रज व गायत

इसलिये आंहज़रत सल्ल० की परिपूर्ण शरीअत में नफ़्से अमल मतलूब नहीं बल्कि वह अमल मतलूब है जिसकी ग़रज़ व गायत सही हो अमल दिल है तो सही मकसद उसकी आत्मा है रूह नहीं तो बेजान दिल किस काम आ सकता है।' अखलाक के ज्ञानियों का यह कहना दुरुस्त है कि इन्सान का कोई कर्म गरज़ व गायत (मकसद) से खाली नहीं होता, लेकिन यह गरज़ व गायत है क्या? इस पर आज तक वह एकमत न हो सके। सुक़रात, अफ़लातून और अरस्तु के जमानः से लेकर आज तक बीसियों नज़रिये कायम हो चुके हैं लेकिन हक़ीकत का राज़ आज तक आशकारा नहीं।

इस्लाम को इससे बहस नहीं कि अखलाक की गरज़ व गायत क्या होती है बल्कि इससे बहस है कि अखलाक की गरज व गायत क्या होनी चाहिय। हक़ीकत यह है कि हमारे काम की अदना व आला, पस्त और बुलन्द अनेक गरज़ व गायत हो सकती है। हमराह में एकबूढ़े की गर्दन से बोझ उतार कर खुद उठा लेते हैं और उसको उसके घर तक आराम से पहुंचा देते हैं, हमारे इस काम की गरज़ यह हो सकती है घर पहुंचकर बुड्ढा खुश होकर हमको मज़दूरी और इनाम देगा। यह भी मकसद हो सकता है कि लोग हमको देखकर हमारी तासरीफ करेंगे

और किसी पब्लिक पद के चुनाव में वह हमको अपना वोट देंगे। यह भी मतलब हो सकता है कि रास्ता चलते लोग हम को इस हालत में देखकर हमें बड़ा दीनदार और नेक समझेंगे। यह भी गरज़ हो सकती है कि आज अगर जवानी में इस बूढ़े की मदद करेंगे तो कल हमारे बुढ़ापे में कल के नवजवान हमारी मदद करेंगे बाज नेक लोगों को ऐसे कामों के करने से स्वाभाविक खुशी होती है, वह अपनी खुशी के लिये इस क़िस्म के कामों को करते हैं। गरज एक ही किस्म के काम के यह तमाम अलग-अलग गरज अलग-अलग लोगों के कामों की गायत और प्रेरक हो सकते हैं, मगर इस सूची पर दोबारा गौर की नज़र डालिये तो मालूम होगा कि यह तमाम अगराज़ ज़ीनेवार पस्ती से बुलन्दी की तरफ़ जा रहे हैं और जिस हद तक जो गरज़ करने वाले की जाती व नफ़सानी गरज़ व गायत से पाक है, उसी क़द्र वह बुलन्द और काबिले क़द्र है। किसी माली या जिस्मानी मुवाविज़ः की खातिर कोई नेक काम करना सबसे पस्त मक्सद है। इसके बाद इज्जत व शोहरत की तलब और नेक नामी हासिल करने के लिए करना भी गो पस्त मक्सद है मगर पहले से बुलन्द है, फिर रूहानी खुशी की फित्री ख्वाहिश की तसल्ली करना पहले से आला मक्सद है मगर फिर भी ज़ाती फायदा और इस दुनिया का लगाव बाकी है यह बिल्कुल फित्री बात है। कोई इंसान किसी के साथ कितना ही उम्दः बर्ताव करे मगर जब उसको मालूम हो जाता है कि इसकी तह में उसकी फुलां (अमुक) ज़ाती गरज़ थी तो इस काम की कद्र व क़ीमत उसकी निगाहों से गिरजाती है और यह सारा जादू बे असर हो जाता है।

इससे आगे बढ़कर मज़हबी लोग अपने कामों की गरज़ व गायत जन्नत की तलब करार दे सकते हैं लेकिन वास्तव में इस में भी गो दुनिया की नहीं लेकिन उस दुनिया की जाती गरज़ व गायत शामिल है इसलिए यह आलातरीन मक्सद होने के बावजूद भी अभी पस्त है। इसलिये यह बात याद रखने के काबिल है कि तालीमे मुहम्मदी में जन्नत को एक मोमिन के नेक काम का लाज़िमी नतीजा बताया ज़रूर गया है मगर इसको नेक काम की गरज़ व ग़ायत करार नहीं दिया गया है।

ज़मीर (अन्तःकरण) की आवाज़ यानी की नफ़्सियाती कैफियत का वह ज़िन्दा एहसास जिसके ज़रिये से वह बुराई और भलाई में तमीज़ कर लेता है और जिसके सबब से उसके दिल के अन्दर खुद नेकी की दावत की आवाज़ उठती है। ग़रीब व लाचार आदमी को देखकर हर शख्स पर फितरतन रहम का जज़्बः तारी होता है कातिल व ज़ालिम से स्वाभाविक हर व्यक्ति को नफरत होती है दिल का यह हाल हर इन्सान के ज़मीर में है। हर अच्छे या बुरे काम के करते वक़्त उसके दिल के पर्दे से प्रशंसा या मलामत की आवाज़ आती है, लेकिन बुरी सुहबत, बुरी तरबियत या किसी खास शदीद जज़्बः के असर से यह आवाज़ और उसका असर दब भी जाता है, यही कारण है कि हर गुनाह के पहले पहल करने में इन्सान डरता है उसके हाथ पाँव लरज़ते हैं वह अपनी गुनहगारी के ख़्याल से कठोर मानसिक तनाव महसूस करता है, वह कभी कभी नदामत के दरिया-ए-एहसास में गर्क़ हो जाता है, इसके ज़िक्र से वह शर्मिन्दगी महसूस करता है। लेकिन जब वह बार-बार अपने ज़मीर की इस आवाज़ को दबाता रहता है तो वह दब कर रह जाती है और उसकी पशेमानी और नदामत के एहसास का शीशा इस ठोकर से चूर चूर हो जाता है।

यह असरात किस चीज़ का नतीजा हैं? इस्लाम के उसूले अखलाक की बिना पर इसका जवाब यही है कि अल्लाह ने हर में नेकी व बदी का जो स्वभाव दाखिल कर रखा है यह उसी का नतीजा है। कुर्आन कहता हैः-

तर्जुमः "(नफ़्स में) उसकी बदी और नेकी इल्हाम कर दी गई है।" (इल्हाम-दिल पर खुदा की तरफ से कुछ बात ज़ाहिर हो जाये) सूरः शम्स-८

वह जज़्बः जिसका नाम ज़मीर है और जो हमको हमारे हर बुरे काम के वक़्त होशियार करता है। वही-ए-मुहम्मदी की शब्दावली में इसका नाम "नफ़्से लव्वामः" (मलामत करने वाला नफ़्स) है और यह खुद हमारे दिल के अन्दर है। सूरः कियामत में हैः-

"और कसम खाता हूं उस नफ़्स की जो इन्सान को उसकी बुराइयों पर मलामत करता है।"

आगे चलकर फ़रमायाः-

"बल्कि इन्सान अपने नफ़्स पर आप समझ बूझ है अगरचेः वह अपने ऊपर तरह तरह के बहानों के पर्दे डाल देता है।"

नवास बिन समआन अंसारी रज़ि० एक साल तक इस इन्तेजार में मदीना में ठहरे रहे कि आंहज़रत सल्ल० से नेकी और गुनाह की हकीकत समझें।

आखिर एक दिन उनको मौका मिल गया और उन्होंने दरियाफ्त किया। फरमाया, "नेकी हुस्ने अखलाक का नाम है और गुनाह वह है जो तेरे दिल में खटक जाये और तुझको पसन्द न हो कि तेरे इस काम को लोग जानें"। इसी तरह एक और सहाबी आपकी खिदमत में नेकी और गुनाह की हकीकत जानने की गरज़ से आये। चारों तरफ जाँनिसारों का हुजूम था और वह शौक व ज़ौक में सबको हटाते आगे बढ़ते गये। लोग उनको रोक रहे थे मगर वह आगे बढ़ते चले गये। आंहज़रत सल्ल० ने देखा तो फ़रमाया, "वाब्सः करीब आ जाओ"। जब वह करीब जाकर बैठे तो फ़रमाया, "ऐ वाब्सः! मैं बताऊं कि तुम क्यों आये हो या तुम बताओगे।" अर्ज़ की, "हुज़ूर ही इरशाद फ़रमायें"। फरमाया, "तुम मुझसे नेकी और गुनाह की हकीकत दरियाफ़्त करने आये हो"। अर्ज़ की, "सच है या रसूलल्लाह"। फरमायाः—

"ऐ वाब्सः अपने दिल से पूछा कर, अपने नफ़्स से फतवा लिया कर, नेकी वह है जिस से दिल और नफ़्स में तसल्ली पैदा हो और गुनाह वह है जो दिल में खटके और नफ़्स को उधेड़ बुन में डाले, अगरचः लोग तुझे इसका करना जाइज़ ही क्यों न बतायें।" *(मुसनद इब्ने हबल भाग चार* पेज २२८)

यही वह हास्स—ए—अख़लाक है जिसका नाम लोगों ने ज़मीर की आवाज़ रखा है।

पहले पहल जब इन्सान अपने ज़मीर की आवाज़ के खिलाफ कोई बात करता है तो उसके दिल के साफ व सादा लौह (तख्ती) पर दाग़ का एक काला नुक्तः पड़ जाता है। अगरचः होश में आकर जब वह तौबः व इस्तेग़फार करता है और पशेमान और नादिम होता है तो वह दाग मिट जाता है लेकिन फिर वही गुनाह बार—बार इसी तरह करता रहे तो वह दाग़ बढ़ता जाता है यहाँ तक कि वह पूरे दिल को काला करके हर किस्म के एहसास से उसको महरूम कर देता है। इसी मफहूम को आँहज़रत सल्ल० ने इन अल्फाज़ में अदा फ़रमायाः—

"बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उसके दिल में दाग का एक स्याह नुक्तः पड़ जाता है तो अगर उसने फिर अपने को अलग कर लिया और खुदा से मग़फिरत माँगी और तौबः की तो उसका दिल साफ हो जाता है और अगर उसने फिर वही गुनाह किया तो वह दाग बढ़ाता जाता है यहाँ तक कि वह पूरे दिल पर छा जाता है।" इसके बाद फरमाया यही वह दिल का ज़ंग हैं जिसका ज़िक्र इस आयत में हैः—

तर्जुमः "कभी नहीं बल्कि उनके (बुरे) कामों की वजह से उनके दिलों पर जंग छा गया था।" (सूरः तुतफ़्फ़ेफ़ीन—१४)

आँहज़रत सल्ल० ने एक तमसील में फरमाया कि मंज़िले मक़सूद की तरफ एक सीधा रास्ता जाता है। रास्ता के इधर उधर दोनों तरफ दो दीवारें खिंची हुई हैं और इन दोनों में दो दरवाज़े खुले हैं लेकिन उन पर पर्दे पड़े हैं। रास्ते के सिरे पर एक आवाज़ देने वाला आवाज़ दे रहा है कि रास्ता पर सीधे चले चलो और इधर—उधर मुड़ो नहीं, तो ऊपर से एक मुनादी पुकार कर कहता है, "खबरदार पर्दा न उठाना उठाओगे तो अन्दर चले जाओगे।" फिर फरमाया यह सस्ता इस्लाम है और यह दरवाजे अल्लाह की मनाही के हैं और यह पर्दे उसके हुदूद हैं और रासता के सिरे पर पुकारने वाला कुर्आन है और ऊपर का मुनादी जो पुकारता है..." वह खुदा का वह वाइज़ (धर्मोपदेशक) है जो हर मोमिन के दिल में है।" (मिशकात)

खुशी और प्रसन्नता

यह बात कि नेकी के कामों से, करने वाले को जो खुशी, और बुराई की बातों से जो रंज होता है वही उसकी नेकी हासिल करने को प्रेरित करता और बुराइयों से बचने पर आमादा करता है, गो तमामतर सही नहीं है ताहम इतना दुरुस्त है कि नेकी के कामों से हकीकतन करने वाले के दिल को खुशी होती है और बुराई से उसको ग़म होता है लेकिन यह नेकी और बदी के प्रेरक नहीं और न इन को हमारे कामों की गरज़ व गायत होनी चाहिये कि यह भी भौतिक स्वार्थ है बल्कि वास्तव में यह नेकी और बदी के स्वाभाविक नतीजे हैं। एक ग़रीब व लाचार की इमदाद से बेशक हमको खुशी होती है लेकिन यह खुशी हमारे सत्प्रयास का स्वाभविक और अनिवार्य नतीजा है, लेकिन वह इसका प्रेरक और इसकी गरज़ व ग़ायत नहीं। इस्लाम के नज़दीक एक मुसलमान के कामों की ग़रज़ व ग़ायत तो सिर्फ एक ही होती है और वह खुदा और उसकी रज़ामन्दी को हासिल करता है।

इस व्याख्या के बाद मालूम होगा कि आप सल्ल० की तालीम ने शिष्टाचार के ज्ञानियों की इस जमाअत के नज़रियः में जो अखलाक की बुनियाद इसी खुशी और रंज या हार्दिक सुख—दुख के उसूल

पर काइम करती है, थोड़ा सा संशोधन कर दिया है और वह यह कि खुशी हासिल करना और हार्दिक दुख से बचना नेकी की गरज़ व गायत (उद्देश्य) नहीं बल्कि अब उसका लाज़िमी और स्वाभाविक नतीजा है। अखलाक के पंडितों में अधिकांश की यही विचारधारा है कि प्रसन्नता नेकी की गरज़ नहीं। इसी बिन्दु को कुर्आन ने इन शब्दों में अदा किया है:–

"लेकिन अल्लाह ने ईमान को तुम्हारा प्रिय बनाया और इसको तुम्हारे दिलों में अच्छा करके दिखाया और कुफ्र और गुनाह और नाफ़रमानी से घिन लगादी, यही लोग नेक चलन हैं।" (सूरः हुजुरात–४)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल० ने इसकी तफसील इस तरह फरमाई:–

१. "जब तुम्हारी नेकी तुम्हें खुशी बख्शे और तुम्हारी बदी तुमको गमगीन कर दें तो तुम मोमिन हो।"

२. "जिसको नेकी खुश और बुराई गमजदः बना दे वह मोमिन है।"

३. जिसने जब कोई बुराई की तो उसको इस से सख़्त नफरत आई और जब कोई अच्छा काम किया तो उसको खुशी हुई, वह मोमिन है।"

गरज़ नेकी पर खुशी की लज़्ज़त को इस्लाम ने ईमान की पहचान मुकर्रर किया है और इस लिहाज से यह कहना गलत न होगा कि इस्लाम के उसूले अखलाक में पहले बयान किये गये संशोधन के साथ फिरक़–ए–लज़्ज़यिः के लिये भी कदम रखने की गुंजाइश बाकी रखी है और पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल० की पैग़म्बराना नज़र से यह बिन्दु भी ओझल नहीं रहा है बल्कि इस नज़रियः में जिस हद तक गल्ती थी उसको सही कर दिया है। (जारी)

प्रस्तुतिः एम०हसन अन्सारी

(पृष्ठ ४ का शेष)

(अनुभव) होता है, फिर किताब व सुन्नत में अल्लाह की राह में ख़र्च करने का बार बार ज़िक्र आया है, पस हम को चाहिए कि हस्बे वुसअ़त (सामर्थ्यानुसार) ग़रीबों की मदद करें, यूं तो हर रोज़ेदार को इफ़्तार कराने का बड़ा सवाब है। लेकिन ग़रीबों को इफ़्तार कराने का और अधिक सवाब है। इस तरफ़ बड़ी कोताही नज़र आती है। हम देखते हैं कि सफ़ेद पोशों की, धनवानों की इफ़्तारी के दस्तर ख़्वान पर सफ़ेद पोश (धनवान) ही नज़र आते हैं। अच्छी बात है, आप अपने बराबर वाले को खिलाइये वह आप को खिलाए इस से दो मुसलमानों के बीच तअ़ल्लुक़ बढ़ेगा और महब्बत बढ़ेगी लेकिन अगर हम अच्छी इफ़्तारी और अच्छे खाने से ग़रीब रोज़ेदार को आनन्दित करेंगे तो अल्लाह तआ़ला की अधिक निकटता (क़ुर्ब) प्राप्त होगी।

बड़ी महरूमी (अभाग्यता) होगी अगर हम रमज़ान में तिलावत से ग़ाफ़िल रहे। इसी महीने में तो क़ुर्आने मजीद उतरा था और इस महीने में हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के पास आकर क़ुर्आन मजीद का दौर किया करते थे, पस हम को इस महीने में क़ुर्आन मजीद की तिलावत का ख़ुसूसी इहतमाम (विशेष व्यवस्था) करना चाहिए। जो लोग क़ुर्आने मजीद पढ़े नहीं हैं चाहिये कि दूसरें का पढ़ना पाबन्दी से सुनें और नमाज़ पढ़ने के लिए जो सूरतें याद की है, तिलावत की नीयत से उन को बार–बार पढ़ें।

तरावीह की भी फ़िक्र होना चाहिए बेहतर तो यह है कि तरावीह में कम से कम एक क़ुर्आन का ख़त्म सुनें और जहां हाफ़िज़ न हो न हाफ़िज़ का इन्तिज़ाम हो सके वहां छोटी सूरतों से जमाअ़त से तरावीह पढ़ने का इहतिमाम (व्यवस्था) ज़रूर करना चाहिए।

बच्चें का संकल्प (अ़ज़्म)

अब्बा रोज़ा हम भी रहेंगे
पिछले पहर जब शोर सुनेंगे
बिना जगाये हम भी जगेंगे
आप उठेंगे हम भी उठेंगे
किसी को हम ना तंग करेंगे
ट्वाएलेट जाकर हाथ धुलेंग
वज़ू करेंगे, नफ़्लें पढ़ेंगे
कर के दुआ़एं सहरी करेंगे
सहरी खा कर कुल्ली करेंगे
फिर रोज़े की नीयत करेंगे
मस्जिद जाकर फ़ज्र पढ़ेंगे
अब्बा रोज़ा हम भी रहेंगे
अम्मा रोज़ा हम भी रहेंगे

पाचों नमाज़ें हम भी पढ़ेंगे
गुल्ली गोली झगड़ा लड़ाई
गाली, ग़ीबत, बदी, बुराई
एक एक को तर्क करेंगे
छोड़ेंगे टी.वी. नाच और गाना
इन सब से हम दूर रहेंगे
दूर रहेंगे चोरी से भी
बात न हरगिज़ झूट कहेंगे
बड़ों की इ़ज़्ज़त छोटों पे शफ़क़त
रातों दिन हम ये भी करेंगे
अब्बा रोज़ा हम भी रहेंगे
अम्मा रोज़ा हम भी रहेंगे

नमाज़े जमाअ़त और तिलावत
दुरूद नबी पर और दुआ़एं
अपना भला हो, सब का भला हो
अपने रब से, मांगें गे दिल से
टोली बनाकर, जाएंगे घर घर
मस्जिद में आओ, कुछ दिन लगाओ
ख़ुद भी सीखो सब को सिखाओ
दीने नबी को ख़ूब फैलाओ
लाओ उजाला ज़ुल्मत मिटाओ
हर भाई से यही कहेंगे
अब्बा रोज़ा हम भी रहेंगे
अम्मा रोज़ा हम भी रहेंगे

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

बनी अहमर

मुह्हिदीन के बाद ग़रनाता में बनी अहमर की एक नई सलतनत काइम हुई लेकिन मुह्हिदीन के मुकाबले में उनकी कोई हैसियत न थी। वह सारे देश पर शासन करते थे और यह केवल एक प्रान्त का हाकिम था लेकिन फिर भी जहां तक हो सका उन्होंने मुसलमानों की शानोशौकत काइम रखी और ६३० हि० से ८९८ हि० तक पूरे दो सौ अड़सठ वर्ष उनका नाम मिटने नहीं दिया। ग़रनाता का कसरुल–हमरा, जिसकी सुन्दरता की कहानी लोगों की अब तक ज़बान पर है और जिसके खण्डर इस मिटी हुई दशा में देखकर बड़े बड़े इंजीनियर दंग रह जाते हैं इन्हीं बनी अहमर की यादगार हैं।

सारे उन्दुलुस के मुकाबले में इस छोटी सी रियासत की हैसियत क्या थी। खुदा मालूम यह किस तरह पौने तीन सौ वर्ष का ज़माना गुज़रा। ईसाइयों को यह रियासत कांटे की तरह खटकती थी लेकिन उनमें आपस में ऐसी दुश्मनी थी कि मुसलमान बचे हुए थे। ८७४ हि० मलका अज़ाबीला और फरडीनेंड की शादी ने आपस का झगड़ा समाप्त किया। अब यह ग़रनाता की तरफ बढ़े। यह अवसर बड़ा कठिन था। मुसलमानों को मिलकर मुकाबला करना चाहिए था लेकिन अफसोस ऐसे समय में भी उनके झगड़े समाप्त न हुए। नतीजा यह हुआ कि ८९८ हि० में ग़रनाता पर ईसाइयों का कब्ज़ा हो गया और मुसलमानों को कहीं सिर छुपाने की जगह बाकी न रही। अबू अब्दुल्लाह (आखिरी मुसलमान बादशाह) अपने खन्दान के साथ मराकश चला गया।

ग़रनाता लेते समय ईसाइयों ने मुसलमानों से वादा किया था और एक प्रतिज्ञापत्र लिख दिया था कि उनकी जानोमाल, उनकी जाएदाद, उनके मदरसे, उनकी मस्जिदें, उनकी इमारतें, उनकी हर चीज़ सुरक्षित रहेंगी। उनके दीनी और धार्मिक कार्य हमेशा की तरह होते रहेंगे। उनके मुकदमों के फैसले खुद उनके क़ाज़ी और मुफ़्ती करेंगे। उन्हें पूरी पूरी आजादी होगी और उन पर किसी प्रकार का अत्याचार न किया जाएगा।

लेकिन अफसोस कि ईसाइयों ने इन वादों का जरा भी ख्याल न किया और जहां तक हो सका मुसलमानों को तंग करना शुरू कर दिया, उनकी जाएदादें छीन लीं, इमारतें गिरा दीं, मदरसे बन्द कर दिए, मस्जिदें शहीद कर दीं, पुस्तकालय फूंक दिए, क़बरें खोद डालीं और सबसे बढ़ कर कि जीवित लोगों को आग में डाल दिया। मुसलमानों को बलपूर्वक ईसाई बनाया गया, जिन्होंने इंकार किया उन्हें जिन्दा आग में डाल दिया गया, फांसी दे दी गई। तात्पर्य यह कि सारे उन्दुलुस से मुसलमानों का सफाया हो गया और एक आदमी भी अल्लाह का नाम और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कलमा पढ़ने वाला बाकी न रहा और यह सब आपस के विरोध के कारण हुआ।

तुर्क–अरतग़ल

पहले बताया जा चुका है कि जिस समय यूरोप के एक कोने में अरब मुसलमान उन्दुलुस में अपनी सलतनत खो रहे थे तो दूसरी तरफ तुर्क मुसलमान यूरोप के दूसरे कोने में अपनी सलतनत को बढ़ा रहे थे इन तुर्कों को उसमानी तुर्क कहते हैं क्योंकि इस सलतनत के पहले संस्थापक का नाम उसमान था।

उसमानी तुर्क असल में तुर्किस्तान के रहने वाले थे। चंगेज़खां के हमलों की वजह से उन्हें वतन छोड़ना पड़ा। जब हमले खत्म हुए तो यह लोग अपने वतन वापस हुए। फरात नदी से उतरते हुए उनका सरदार सुलैमान डूब गया उसके चार बेटे थे। दो बाप की वसीयत के अनुसार वतन वापस आए और दो अरतग़रल और दवन्दार दो हजार आदमियों के साथ एशिया–ए–कोचक की तरफ रवाना हुए कि वहां सलजूक़ियों की पनाह में रहें। निकिट पहुंचकर आदाब बजा लाने के लिए बेटों को आगे बादशाह की सेवा में भेजा और खुद साथियों के साथ धीरे–धीरे चलते रहे। एक दिन रास्ते में देखते क्या हैं कि दो फौजें लड़ रही हैं। एक कमजोर है और दूसरी

ताकतवर। अरतग़रल के दिल में हमदर्दी पैदा हुई। वह जोश में अपने साथियों को लेकर बढ़ा और कमजोर फौज के साथ होकर ताक़तवर से लड़ने लगा। उसने इस वीरता से जंग लड़ी कि दुश्मन की पराजय हुई और बाद को मालूम हुआ कि जिन की सहायता की है वह मलिक शाह सलजूक़ी का बेटा अलाउद्दीन कैक़बाद है और हारने वाले तातारी हैं। सुलतान अलाउद्दीन अरतग़रल से बहुत खुश हुआ और रूमी सीमा के क़रीब बहुत काफी ज़मीन जागीर में दी। उस जमाने में सलजूक़ी बहुत कमजोर हो गए थे। अलाउद्दीन ने अरतग़रल को बहुत ग़नीमत समझा और उसे हर प्रकार की मदद देने लगा। रूमी करीब थे। इसलिए पहले उन्हीं से मारके रहे। कुछ ही दिनों में अरतग़रल ने उनके बहुत से किले फतह कर लिए। अब रूमियों ने तातारियों को साथ लेकर हमला किया और अरतग़रल सुलतान के साथ लड़ाई में शरीक हुआ और इस बहादुरी से लड़ा कि रूमियों और तातारियों दोनों की पराजय हुई। अलाउद्दीन ने यह एलाका भी उसकी जागीर में शामिल कर दिया और उसको अगली फौज का सरदार नियुक्त किया। अब अरतग़रल के पास काफी एलाका हो गया। सुलतान के हुक्म से उसने निकट के बागी अमीरों के क्षेत्र पर भी हमला किया और उन्हें अपनी जागीर में शामिल कर लिया। इस प्रकार उसका अधिकार क्षेत्र बढ़ गया और बहुत बड़ा सरदार हो गया। उसका ७६७ हि० में देहान्त हो गया।

ग़ाज़ी उसमान पाशा

बाप के मरने पर ६८८ हि० में सुलतान ग़यासुद्दीन सलजूक़ी के हुक्म से उसे रियासत मिली। यही वह सुलतान उसमान हैं जिनके नाम से तुर्क उसमानी कहलाते हैं। गाज़ी उसमान की शादी एक बहुत बड़े बजुर्ग अदब अली की बेटी माल खातून के साथ हुई। अदब आली का प्रभाव बहुत अधिक था। इसलिए इस शादी की वजह से गाज़ी उसमान का प्रभाव और बढ़ गया।

रियासत मिलते ही कराचा हिसार के सरदार कोलस ने उन पर चढ़ाई की परन्तु पराजित हुआ। इस पर सुलतान की तरफ से उसे 'बक' की उपाधि मिली। उसका नाम खुतबों में दाखिल किया गया और उसे अनुमति दी गई कि अपने नाम का सिक्का ढाल सकता है। नेकोलस के अतिरिक्त और दुसरे सरदारों से भी लड़ाइयां हुईं लेकिन सबमें उसमान की विजय हुई। सन् ७०० हि० में तातारियों के हाथों सलजूक़ियों का खात्मा हो गया और उनकी सलतनत का हर सरदार अपनी अपनी जगह पर स्वतंत्र अधिकारी बन बैठा तो उस समय उसमान ने भी अपनी बादशाहत का एलान कर दिया और नगर 'यकी' को अपनी राजधानी बनाया। पास में बहुत सी छोटी रियासतें थीं जिसे उसमान ने चन्द ही दिनों में फतह कर लिया। रूमी सलतनत ने जो यह रंग देखा तो मुकाबला के लिए कुसतुनतुनिया से एक बहुत बड़ी सेना रवाना की मगर लड़ाई में रूमी बहुत बुरी तरह हारे। अब रूमियों ने तातारियों को साथ लेकर फिर हमला किया परन्तु इस बार भी पराजित हुए और बहुत दूर तक तुर्कों का कब्जा हो गया। अब ग़ाज़ी उसमान ने एशिया–ए–कोचक के तमाम रूमी सरदारों से लड़ाई का एलान कर दिया। कुछ ने जज़िया (कर) देकर सुलह कर ली परन्तु अधिकांश तातारियों को साथ लेकर लड़े। ग़ाज़ी उसमान खां ने अपने बेटे ओवर खान को उनके मुकाबले के लिए भेजा। दुशमनों की जगह जगह पराजय हुई। आखिर ७१७ हि० में बरुसा पर हमला किया। दस वर्षों की घेराबन्दी के बाद ७२७ हि० मे किला भी फ़तह हो गया। फतह की खबर पहुंची तो ग़ाज़ी उसमान का अन्तिम समय था और देखने आया तो उसे वसीयत की कि अल्लाह का डर रखना, प्रजा के साथ मेहरबानी का बरताव रखना। इंसाफ को कभी हाथ से न जाने देना, शरीअ़त पर अमल करना और उसे मुल्क में अच्छी तरह फैलाना। यह भी ताकीद की कि बरूसा को राजधानी बनाना और मुझे वहीं दफ़न करना।

ओवर खान

उसमान ने दो बेटे छोड़े। अलाउद्दीन और ओवर खान यद्यपि अलाउद्दीन पाशा बड़ा था लेकिन उसकी तबीयत का झुकाव इबादत करने और सबसे अलग थलग रहने में था। इसलिए उसमान खान ने अपनी जिन्दगी ही में ओवर खान को बादशाह नामित कर दिया था। ओवर खान ने अलाउद्दीन को सदरे आज़म (प्रधानमंत्री) बनाया। अलाउद्दीन बड़ा बुद्धिमान और समझदार था।उसने देश में टेक्साल बनाई, फौज का प्रबन्ध ठीक किया देश का भीतरी सारा प्रबन्ध उसी को सुपुर्द था और बाहर दुश्मनों से लड़ाइयां ओवर खान के जिम्मे थीं। इस प्रबन्ध के कारण थोड़े ही दिनों में सारा एशिया–ए–कोचक तुर्कों के कब्ज़ें में

(शेष पृष्ठ १६ पर)

चौथी किस्त

क्या अब इस्लाम की आवश्यकता नहीं रही?

मु० कुत्ब

अख़लाक़ (नैतिकता) व कर्म के विचार से दुन्या आज जिस स्थान पर खड़ी हुई है, आज से तेरह सदी पहले भी वह इसी स्थान पर खड़ी थी। उस समय इस्लाम ही ने उसको झूठे खुदाओं से छुटकारा दिलाया था। आज के झूठे खुदाओं से भी इस्लाम ही मानवता को छुटकारा दिला सकता है। इन खुदाओं ने आज अत्याचार, शहनशाहियत, सामराज और पूंजीवाद का लिबादा ओढ़ रखा है। एक तरफ पत्थर दिल पूंजीपति गरीब मजदूर का खून चूस चूस कर अपनी तिजोरी भर रहा है और दूसरी तरफ प्रोलतारी डिकटेटरशिप के नाम पर कुछ लोग अपनी खुदाई के ठाठ जमाए बैठे हैं। यह लोग अवामी आज़ादी के नाम पर लोगों की आज़ादी को पामाल (पददलित) करते हैं और दावा यह करते हैं कि वह अवाम की मरजी पूरी कर रहे हैं।

सम्भव है यह बात सुनकर कि इस्लाम इंसान के लिए आज़ादी का पैग़ाम है, बाज़ लोगों के मन में यह प्रश्न उठे कि फिर इस्लाम खुद मुसलमानों को इन ज़ालिम और *अत्याचारी डिकटेटरों* से क्यों छुटकारा नहीं दिलाता जिन्होंने आज सारी दुन्या–ए–इस्लाम को आज़ादी से वंचित कर रखा है और जो इस्लाम के नाम पर मुसलमानों को अपमानित करते रहते हैं। इन आपत्ति कर्ताओं के जवाब में हम यह निवेदन करेंगे कि यद्यपि यह सच है कि यह डिकटेटर इस्लाम का नाम प्रयोग करते हैं मगर सच्चाई यह है कि इनके शासन में इस्लाम को कोई अधिकार या स्थान प्राप्त नहीं है और न उनके जीवन में या उनके चारों तरफ इस की कोई झलक ही नजर आती है। यह नाम के मुसलमान उस इंसानीह वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं जिसके बारे में खुद अल्लाह तआला फरमाता हैः–

अनुवाद– "और जो लोग अल्लाह के उतारे हुए कानून के अनुसार फैसला न करें वह ज़ालिम हैं।

ऐ मुहम्मद सल्ल०! तुम्हारे रब की कसम यह कभी मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपसी मतभेदों में यह तुमको फैसला करने वाला न मान लें और फिर जो कुछ तुम फैसला करो उस पर अपने दिलों में भी कोई तंगी महसूस न करें बल्कि पूरे का पूरा स्वीकार कर लें।"

हम जिस इस्लाम से परिचित हैं वह घमण्डी बादशाहों और अत्याचारी शासकों के वजूद को बर्दाश्त नहीं करता। यह उन को भी इसी तरह खुदाई कानून के शिकंजे में कसकर रखता है जिस तरह आम लोगों को और वह इसके लिए तैयार न हों तो उन्हें हमेशा हमेशा के लिए नष्ट कर देता है क्योंकिः–

अनुवाद– "जो झाग है वह उड़ जाया करता है और जो चीज इंसानों के लिए लाभकारी है वह ज़मीन में ठहर जाती है।" (कुर्आन– १३,१७)

दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह हुआ कि इस्लाम की हुकूमत में डिकटेटर नहीं होंगे क्योंकि इस्लाम तानाशाही को बर्दाश्त नहीं करता और न यह किसी इंसान को इस बात की अनुमति देता है कि वह अपने जैसे दूसरे इंसानों पर खुदा और उसके रसूल (सल्ल०) की मर्ज़ी छोड़कर अपना बनाया हुआ कानून ठूंसने की कोशिश करे। इस्लाम की हुकूमत में शासक खुदा और जनता दोनों के सामने जवाब देह होता है।

इस जवाब देही के फर्ज़ का तकाज़ा है कि वह इंसानों में खुदा के कानून को जारी करे। अगर वह इस फर्ज़ या कर्तव्य में कोताही करता है तो दूसरों पर शासन करने का अधिकार खुद बखुद समाप्त हो जाता है।

महानता और वैभव का मज़हब– इस्लामी राज्य अपने शहरियों को न केवल अपने अन्दर के ज़ालिम व अत्याचारी शासकों के दुष्टता से सुरक्षित रखता है बल्कि बाहरी अत्याचार से भी उनकी रक्षा करता है। इस्लाम इंसान को जिन्दगी की एक बहुत सीधी सादी जीवन शैली प्रदान करता है और उसको इस बात से प्रेरणा देता है कि अपने रब की प्रसन्नता की प्रप्ति के लिए दिलो जानसे उसकी राह में जिहाद (कोशिश) करे, अपनी मर्ज़ी को बिल्कुल उसकी मर्ज़ी के अधीन कर दे अपने तमाम संसाधनों का प्रयोग करके जुल्म व अत्याचार का डट कर मुकाबला करे।

सामराज्यवाद से छुटकाराः– इसीलिए आइये हम सब मिलकर इस्लाम का दामन मज़बूती से थाम लें

क्योंकि हम इसके झण्डे तले जमा होकर दुन्या से सामराज्य के तमाम बचीखुची निशानियसां मिटा सकते हैं। इंसानियत को सामराज्य के इस देव से, जो अब तक धरती को अपने अत्याचार का निशाना बनाए हुए है, छुटकारा दिलाने की अब यही एक मात्र आशा बाकी रह गई है। यहीं से वास्तविक आजादी की राहें फूटेंगी। उसके बाद कोई किसी का गुलाम नहीं होगा। सब इंसानों का ख़्याल, अमल, उपार्जन (रोज़ी) और मज़हब की पूरी आज़ादी हासिल होगी। सबकी इज़्ज़त आबरू सुरक्षित होगी क्योंकि हुकूमत खुद उनकी सुरक्षा की जिम्मेदार होगी। केवल हम सही अर्थों में मुसलमान और अपने रब के वफ़ादार और बन्दे बन सकते हैं। उस रब के जिसने इस्लाम को हमारे लिए चुना है।

अनुवाद, "आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए मुकम्मल कर दिया और अपनी नेअ़मत तुम पर तमाम कर दी है और तुम्हारे लिए इस्लाम को तुम्हारे दीन की हैसियत से कुबूल कर लिया है" पवित्र क़ुर्आन–३,५

अंतर्राष्ट्रीय सुधार प्रोग्राम :–

इस्लाम का इन इनकलाबी सुधारों का क्षेत्र केवल मुसलमान समाज तक ही सीमित नहीं है बल्कि अपनी प्रकृति के लिहाज़ से एक अंतर्राष्ट्रीय सुधार प्रोग्राम है। इसका वजूद (अस्तित्व) आज की मुसीबत ज़दः दुन्या के लिए, जो गृह युद्ध की तबाहकारियों की शिकार है और जिसके सरपर तीसरे विश्व युद्ध का खतरा मिडला रहा है, एक दयवी प्रसाद से कम नहीं।

अन्तर्राष्ट्रीय सामराज्य के दो कैम्पः– आज दुन्या दो कैम्पों में बटी हुई है। पूंजीवाद और साम्यवाद और यह दोनों एक दूसरे के खिलाफ पंक्तिबद्ध हैं क्योंकि उन में से हर एक दुन्या पर अपनी सत्ता जमाना चाहता है और अंतर्राष्ट्रीय मण्डियों और महत्वपूर्ण युद्धस्थलों पर कब्जा करने को इच्छुक हैं मगर अपने तमाम मतभेदों के बावजूद इन दोनों में एक बात संयुक्त तौर पर पाई जाती है वह यह है कि दोनों का दृष्टिकोण सामराज्यी है और दोनों एकसां तौर पर दुन्या की कौमों को अपना गुलाम बनाना चाहते हैं। अतएव दोनों इस बात के लिए कोशिश करते नज़र आते हैं कि वह अधिक से अधिक इंसानी और भौतिक (माद्दी) संसाधनों पर कब्ज़ा जमाएं। दूसरे इंसान की हैसियत उनकी निगाहों में बेज़बान जानवरों से अधिक नहीं अपनी शब्दावली में यह लोग इंसानों की संख्या शक्ति कहते हैं या फिर वह काम करने वाले यंत्र हैं जिन की बदौलत वह इन निन्दनीय उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं।

एक तीसरा ब्लाकः अगर इस्लामी दुन्या इस साम्राज्यी बरबर सत्ता और अत्याचार के खिलाफ एक जुट हो जाए तो अंतर्राष्ट्रीय शत्रुता तथा द्वंद्व की रोक थाम हो सकती है जिस से विश्वशान्ति को अति अधिक खतरा है। मुसलमान देश आपस में एकता क़ाइम कर लें तो बड़ी आसानी से एक तीसरा मुस्लिम ब्लाक बन सकता है। अगर इस प्रकार का कोई ब्लाक बन जाए तो अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में केन्द्रीय महत्व प्राप्त कर सकता है। क्योंकि भौगोलिक दृष्टिकोण से यह मुसलमान देश नयी और पुरानी दुन्या के केन्द्र में स्थित हैं। अपनी इस भौगोलिक पोज़ीशन के कारण अपने कौमी व समुदाय सम्बन्धी लाभ के लिए बिना रोक टोक जिस कैम्प के साथ चाहेंगे मिलेंगे और पूर्वी या पश्चिमी साम्राज्यों के पिट्ठू बनने के बजाय वह अपने असली लाभों के लिए मिलकर संघर्ष कर सकेंगे।

सुख शान्ति और रुचिकर जीवनः– इस्लाम इंसानियत की एकमात्र आशा है और इसी से इसका भविष्य सम्बद्ध है। आज इस्लामी व्यवस्था की स्थापना उसी तरह सम्भव है जिस तरह पहले थी बशर्ते की वह तमाम लोग जो इसके दायरे में शामिल हैं आज ही से यह प्रण कर लें। फलस्वरूप तीसरे विश्वयुद्ध का खतरा और तनाव समाप्त हो जाएगा दूसरे शब्दों में सुखशान्ति और खुशियों की भरपूर खुशगवार ज़िन्दगी होगी।

पश्चिम की उन्नति की वास्तविकता :– आधुनिक पश्चिमी देशों ने विज्ञान के क्षेत्र में बेपनाह सफलता प्राप्त की है परन्तु इंसानियत के मैदान में यह अब भी अतिअधिक पिछड़े हुए हैं। विज्ञान ने इन्हें भौतिक खुशहाली प्रदान की है मगर अच्छे इंसान नहीं दिये। इंसानियत की उन्नति रुक सी गई है, दिल उच्च मानवीय मूल्यों से खाली हैं। वर्तमान सभ्यता ने रूह से अधिक पदार्थ (माद्दा) पर जोर दिया है जिसका नतीजा यह निकला है कि लोग अपने उच्च आदर्शों व संयुक्त उद्देश्यों के बजाए अपने व्यक्तिगत (ज़ाती) ऐश व आराम और अपने स्वार्थ के उद्देश्यों की प्राप्ति को अधिक महत्व देने लगे हैं। यही कारण है कि आधुनिक युग का इंसान जिसमानी लज़्ज़तों की तलाश ही में मारा मारा फिर रहा है। स्पष्ट है कि इस सूरते

हाल (परिस्थिति) को इंसान की तरक़्क़ी या इंसानियत का विकास नहीं कह जा सकता क्योंकि इंसान की या इंसानियत की तरक़्क़ी का अर्थ केवल भौतिक और वैज्ञानिक उन्नति नहीं है बल्कि हैवानी इच्छाओं (वासनाओं) के अतिक्रमण (गलबः) से पूरी आजादी भी इस के अर्थ में शामिल है यही वह बिन्दु है जहां इस्लाम हमारा सहायक है क्योंकि वही इंसानियत की वास्तविक उन्नति व विकास की प्राप्ति में सहायक हो सकता है।

वास्तविक उन्नति का मापदंडः— तेज़ रफतार हवाई जहाज़ों, ऐटमबमों, रेडियो और रौशन बिजली के कुमकुमों को उन्नति नहीं कहते। वास्तविक उन्नति को यदि मालूम करना है तो देखिए कि क्या इंसान को अपनी पाशविक इच्छाओं (हैवानी ख्वाहिशात) और जज़बात पर पूरा क़ाबू हासिल है या वह उनके हाथों में खेलौना बना हुआ है। यदि इंसान अब भी अपनी काम वासनाओं के सामने बेबस व लाचार है और वह उन से ऊपर उठकर कोई बात सोच ही नहीं सकता तो समझ लीजिए कि इंसान की वास्तविक उन्नति उससे कोसों दूर है और बहैसियत इंसान उसकी दशा ज्ञान और साइंस के मैदानों में उन तमाम चमतकारी सफलताओं के बावजूद रहम के क़ाबिल है।

यह एक अटल ऐतिहासिक वास्तविकता है कि नैतिक और इंसानी मूल्यों को छोड़कर कोई कौम भोग विलास से ग्रस्त हो जाती है तो वह कभी इस योग्य न हो सकेगी कि अपनी पूर्व शक्ति, महानता, प्रतिष्ठा और दबदबे को काइम रख सके और इंसानियत के विकास में कोई कारनामा अंजाम दे सके। प्राचीन यूनान हो या ईरान और रोमन इमपायर की तबाही या अब्बासियों के अन्तिम युग में खुद मुसलमानों की सत्ता तथा महानता का पतन, इन सब में भोगविला की तबाहकारी का प्रभाव नज़र आता हैं। वर्तमान इतिहास में फ्रांसीसी कौम के इस शर्मनाक आचरण को कौन भुला सकता है जो दूसरे महायुद्ध में उसने पेश किया। दुश्मन के सामने हथियार डालने में इस कौम ने जरा भी देर नहीं की क्योंकि उनको अपने देश की सुरक्षा से कहीं अधिक अपने जानोमाल और ज़ाती आराम व सुख सुविधा की पड़ी हुई थी। अपने राष्ट्र की महानता और उसकी शुहरत व नेकनामी से कहीं अधिक उन्हें इस बात की चिन्ता खाए जा रही थी कि जिस तरह भी बन सके उन की राजधानी पेरिस और उसके नाच घर दुश्मन की बम्बारी से बच जाएं। (जारी)

अनुवाद— हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ ३३ का शेष)

चेतनाशून्य सामाजिक संगठन के आधार पर स्पट किया जाना चाहिए। वर्तमान युग में शिक्षा, औद्योगीकरण, तार्किकता और समानता की भावना में इतनी अधिक वृद्धि हो चुकी है कि आज व्यक्ति इस व्यवस्था को किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं कर सकते। आज उच्च वर्ण के शिक्षित और प्रगतिशील व्यक्ति भी इस व्यवस्था को अन्यायपूर्ण कहने में संकोच नहीं करते। वास्तविकता तो वह है कि वर्तमान युग में अन्धविश्वासों, रूढ़ियों, कर्मफल में विश्वास, परलोक की धारणा और परम्परागत जीवन के प्रभाव में अत्याधिक कमी हो जाने के कारण अब कोई ऐसा तर्क नहीं रहा जो वर्ण—व्यवथा के औचित्य को सिद्ध कर सके। इसी के फलस्वरूप हमारे समाज में वर्ण—व्यवस्था के पुनः लौटने की सम्भावना करना अब पूर्णतया निराधार

(पृष्ठ १६ का शेष)

आ गया। अब उनकी ताक़त इतनी बढ़ी कि मजबूरन कैसरे रूम (रूम के बादशाह) ने भी दोस्ती की, हद यह कि कैसर कान्ता कोज़ीनी ने अपनी बेटी सुलतान के निकाह में दे दी।

सन् ७५२ हि० में शाह सरूयः ने कुसतुनतुनिया पर चढ़ाई की।कैसर (बादशाह कुसतुनतुनिया) ने सुलतान से सहायता मांगी। चुनांचि यहां से एक बड़ा लश्कर भेजा गया लेकिन इस बीच शाह सरूयः का देहान्त हो गया। इसलिए कोई लड़ाई नहीं हुई। मगर इस तरह तुर्कों को अन्दाजा हो गया कि रूमी किस कदर कमजोर हैं। चुनांचि कुछ ही दिनों बाद सुलतान के बड़े लड़के सुलैमान ने दानियाल दर्रे से उतर कर यूरूप के कई शहर फतह कर लिये और आगे के लिए यूरोप का रास्ता खोल दिया।

सन् ७३० हि० में शिकार खलते हुए घोड़े से गिर कर सुलैमान मर गया। ओवर खान को इससे बड़ा रंज पहुंचा और दो महीने बाद उसका देहान्त हो गया। ओवर खान अपने बाप ग़ाज़ी उसमान खान की तरह बड़ा बहादुर, बुद्धिमान और समझदार था। शरीअत का पूरा पाबन्द और प्रजा का बहुत अधिक शुभचिन्तक था। उसने अपने शासनकाल में हजारों मस्जिदें, मदरसे, खानकाहें, पुल, सराएं, लंगर खाने और हम्माम (स्नान गृह) बनवाए।

अनुवाद— हबीबुल्लाह आज़मी

15 अगस्त 2006

एम० हसन अंसारी

अध्यक्ष महोदय,

आज पन्द्रह अगस्त है। हमारे प्यारे देश भारत का स्वतन्त्रता दिवस (Independence Day) आज हम सब यहाँ आजादी का जश्न मनाने के लिये एकत्र हए हैं। मैं आप सब का आभार व्यक्त करता हूं, शुक्रिया अदा करता हूं कि मुझे यहाँ अपने विचार व्यक्त करने का मौका दिया गया। हम, आप, सबको यह दिन मुबारक हो।

१५ अगस्त १९४७ को हमारा देश आजाद हुआ। इसके पहले यहाँ अंग्रेजों की हुकूमत थी हम पराधीन थे, यह जानते हुए कि 'पराधनी सपने सुख ना हीं'। गुलामी की ज़िन्दगी थी। उन्सठ साल पहले की बात है, एक साल बाद देश आजादी की हीरक जयन्ती मनायेगा। कुछ लोग कह सकते हैं कि गुलामी को याद करना अच्छी बात नहीं है क्या जरूरत है हर साल यह जश्न मनाने की। लेकिन यह चन्द समझदार लोगों की बहुत बड़ी नासमझी है। अगर हम यह भूल जायें या भुला दें कि कोई चीज़ हमको कब और कैसे मिली थी तो उस चीज़ की क़द्र व कीमत कम हो जाती है या नहीं रह जाती, ना क़द्री होने लगती है। इसके साथ ही किसी के एहसान को भुला देना खराब बात है। एक महापुरुष थे अभी हमारे ज़माने में। लोग बताते हैं कि अगर कभी किसी ने उन्हें एक गिलास पानी भी पिलाया था तो तो सारी ज़िन्दगी उन्हें उसके एहसान का ऐतराफ रहा। एक स्टूडेन्ट एक बड़े कालेज में दाखिला लेने गया। प्रिंसपल ने कहा बाहर झाड़ू है उसे लेकर फुलाँ कमरे में झाड़ू लगा आओ तब तुम्हारे दाखिला पर गौर किया जायेगा। वह स्टूडेन्ट झाड़ू लेकर गया, कमरा साफ किया, झाड़न से गर्द झाड़ी, मेज़–कुर्सी दुरुस्त कर दी। प्रिंसपल ने मुआइना किया और खुश होकर उसे अपने यहाँ दाखिला दिया, आगे चलकर वही टूडेन्ट एक बहुत बड़े राष्ट्र का राष्ट्रपति बना। यह बड़प्पन की बात है। तो हमको अपनी आज़ादी का जश्न मनाना चाहिये और देश को आज़ाद कराने के लिये इस देश के लोगों ने जो कुर्बानियाँ दी हैं, जो त्याग और सैक्रीफाइस किया है, जो यात्नायें झेली हैं, जो दुख सहे हैं उन्हें आज के दिन याद करना चाहिये ताकि हम आजादी की क़द्र व कीमत को जानें और इसकी रक्षा करने का हमारे अन्दर दायियः और जज़्बः पैदा हो। चौदह पन्द्रह अगस्त १९४७ की दरमियाना रात है। बारह बजे रात को यूनियन जैस दिल्ली में उतर जायेगा और तिरंगा फहरायेगा और भारत आजाद हो जायेगा। रात बारह बजने में दो मिनट बाकी है। लार्ड माउन्ट बैटन ने अपने एडीसी को बुलाया और कहा हम भोपाल की महारानी जहाँ आरा बेगम को एक यादगार प्रशंसा ताम्र पत्र देना चाहते हैं। एडीसी बोले, पर अब समय कहाँ रहा है सिर्फ दो मिनट बाकी हैं उसके बाद आप की हुकूमत का खात्मा है। लार्ड माउन्ट बैटन बोले दो मिनट तो बहुत हैं, मुल्कों की हार और जीत के लिये कभी–कभी एक मिनट ही काफी होता है। इतिहास गवाह है कि लार्ड माउन्ट बैटन का एक हुकमराँ की हैसियत से भारत में यह आखिरी हुक्म था जिसे दो मिनट में अंजाम दिया गया। और आज हमारा क्या हाल है? आज सब जानते हैं। सूरज को दिया दिखाने की ज़रूरत नहीं।

सज्जनों! हमें आज़ादी सैकड़ों कुर्बानियों के बाद मिली है यह कुर्बानियाँ सब ने दी हैं। मुल्क को आज़ाद कराने में हम बराबर आज़ादी की लड़ाई में शरीक रहे हैं, हमने जान व माल की कुर्बानी दी है। मसीबतें झेली हैं। हमारे घर बार उजाड़े गये हैं। हमने सज़ायें काटी हैं। हम फाँसी के तख़्ते पर चढ़े हैं। मौलाना हुसैन, अहमद मदनी, मौलाना महमूद हुसैन मौलाना मुहम्मद अली जौहर, मौलाना रहमत उल्ला केशनवी, हाजी इमदाद उल्ला महाजिर मक्की, मौलाना बरकत उल्ला, डा० मुख़्तार अहमद अंसारी, मौलाना अबुल कलाम आजाद अशफाक उल्ला खाँ यह सब कौन थे? यह सब मुसलमान थे। और इन्होंने और इनकी अगुवाई में हिन्दुस्तान के लाखों नहीं करोड़ों मुसलमानों ने गान्धी, गोखले, पटेल, सुभाष, तिलक, पं० जवाहर लाल नेहरू, रामप्रसाद बिसमिल सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि और इनकी अगुआई में देश के करोड़ों हिन्दू भाइयों के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर आजादी की लड़ाई लड़ी थी। और मुल्क को आज़ाद कराया था। अशफाक़

उल्ला खाँ और राम प्रसाद बिसमिल को अंग्रेज़ सगा भाई समझते रहे। यह दोनों हंसते हंसते फाँसी के झूले पर झूल गये। किस लिये? देश को आजाद कराने के लिये। इन और इन जैसे लाखों के तुफैल में आज हम यह स्वतन्त्रता दिवस मना रहे हैं। मौलाना मोहम्मद अली जौहर इंग्लैंड गोलमेज़ कान्फ्रेन्स में गये। तब देश गुलाम था। हम महकूम थे, अंग्रेज़ हाकिम। मुहम्मद अली जौहर से पूछा गया "क्या चाहते हैं?" जौहर ने कहा "आजादी"। "और अगर आज़ादी न मिले तो?" दूसरा सवाल था। जौहर ने सीना तान कर कहा, "तब तो आप को मुझे यहीं लन्दन में दो गज़ ज़मीन देनी पड़ेगी।" जौहर कौन थे? मुसलमान थे।इधर कुछ वर्षो से आज़ादी की लड़ाई में मुसलमानों के रोल को नकारने और नज़र अन्दाज़ करने का एक अभियान सा चलाया जा रहा है। और इस ग़लत कोशिश में लोग इतने कामयाब हो गये हैं कि आज की हमारी युवा पीढ़ी आज़ादी की लड़ाई की सच्ची दास्तान से बिल्कुल अनभिज्ञ होकर रह गयी है। उसे नहीं मालूम कि हुसैन अहमद मदनी कौन थे? बरकत उल्ला कौन थे? अली बिरादरान कौन थे? इसलिये कि इनके नाम के साथ 'मौलाना' लगा है। इसलिये कि यह मदरसे के आदमी थे। और पिछले दशक या इससे कुछ पहले से 'मौलाना' और 'मदरसे' को एक खास रंगीन चश्मे से देखा जा रहा है जो मुल्क की बदनसीबी है। इनकी आड़ में गलतकार सफेद पोशों को अपनी मक़सद बरारी में खूब खूब कामयाबी मिल रही है। देश को इसका नोटिस लेना चाहिये। जनहित में और देश के हित में।

इतिहास के महान विद्वान प्रोफेसर शान्ति मय राय कोलकता के सार्वजनिक जीवन में अच्छी ख्याति रखते हैं। वह अपनी किताब रोल आफ इण्डियन मुसिलम्सं इन इंडियाज फ्रीडम" में लिखते हैं:-

"मैं देखता हूँ कि स्कूल और कालेज के अध्यापकों में स्वतन्त्रता आन्दोलन में भयारतीय मुसलमानों की भूमिका के प्रति एक सच्ची किनतु भयावह अनभिज्ञता पायी जाती है। हमारी पूरी पीढ़ी के सामने विख्यात इतिहास कारों द्वारा इतिहास को मनगढ़ंत मित्थ्याओं के रूप में तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करना एक पुरानी कला है जिसका प्रयोग मिथ्या और झूठ के गढ़ने वाले कुछ बुद्धिजीवियों ने वर्तमान समय में किया है और जिनकी "सेवाओं" का भरपूर लाभ उठाकर एक स्वच्छ ढाँचे पर राष्ट्र निर्माण के किसी प्रयास को उभरने नहीं दिया गया है।"

प्रिय मित्रो!

वस्तु स्थिति यह है। हकीकत आपके सामने है। इसकी अनदेखी करना एक मुजरिमाना फेल है। मुझे उम्मीद है कि हम खुद सही को सही और गलत को गलत कहना सीखेंगे और दूसरों को भी इस पर आमादा करेंगे। समाज में गलतकार लोगों की संख्या थोड़ी होती है, लेकिन यह मुट्ठी भर लोग देश और समाज ऐसे मुट्ठी भर लोगों को गलत क़ाम करने की छूट देता है और उनकी गलतकारियों का खामोश तमाशायी बना रहता है, वह समाज एक दिन बुराइयों की आमाजगाह बन जाता है। यह हमारा दुर्भाग्य है।

जिन दिनों आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी। देश एकजुट था। इसकी अनेकता मेंएकता रंग लाई। देश आजाद हुआ। लेकिन नफरत और भय फैलाने वाले तत्व अपना काम करते रहे। यह वही तत्व हैं जिनका आजादी की लड़ाई में योगदान तो क्यसा होता, उल्टे अंग्रेजों से मिलकर मुखबिरी का काम अंजाम देते रहे। और तबसे आज तक वह बराबर सक्रिय हैं। जागरुक समाज को ऐसे तत्वों, ऐसे अनासिर की रेशादवानियों से होशियार रहना चाहिये और ऐसे तत्वों को निष्क्रिय करना चाहिये। उन्हें नकाब करना चाहिये।

आज़ादी की लड़ाई का ज़िक्र हो और मंगल पांडे का नाम न आये यह नाइन्साफी है। किनतु हममें से कितनों को यह बात मालूम है या बताई गई है कि मेरठ के मंगल पांडे के दाहिने हाथ सुल्तानपुर के जरल बख्त खाँ थे, जिनकी बात अगर आखिरी मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर मान लिये होते, तो उन्हें नेपाल के रास्ते रंगून पहुँचकर दोगज ज़मीं भी मिल न सकी कूये यार में' का शिकवा न होता।

आजाद भारत में कुछ लोगों को शुरू से दो शब्दों से नफरत सी रही है एक 'मुसलमान' दूसरा 'उर्दू'। यहाँ इस हकीकत को उजागर करना जरूरी मालूम होता है कि पंडित बृजनारायन चकबस्त का उर्दू साहित्य में एक स्थान है। और आजादी की लड़ाई में उनकी उर्दू में कही गयी नज़्मों का विशेष योगदान रहा है। वह कहते हैं:-

हुक्म हाकिम का है फरियाद ज़बानी रुक जाय
दिल में बहती हुई गंगा की रवानी रुक जाय
कौम कहती है, हवा बन्द हो पानी रुक जाय

कौम कहती है, हवा बन्द हो पानी रुक जाय
पर यह मुमकिन नहीं, यह जोशे ज़वानी रुक जाय
हों खबरदार, जिन्होंने यह अजीयत दी है,
कुछ तमाशा नहीं, यह कौम ने करवट ली है।

एक दूसरी नज़्म में कहते हैं:—

तलब फिजूल है काँटों की फूल के बदले,
न लें बहिश्त भी हम होमरूल के बदले।

पंडित जी एक और जगह कहते हैं:—

जफा वतन पे है फर्ज़े वफा को पहचानो,
विकारे कौम गया कौम के निगहबानो!!
अगर पड़े रहे गफलत की नींद में सरशार,
तो ज़ेरे मौज फना होगा आबरूका मज़ार!!

अध्यक्ष महोदय,

मौलाना अबुल कलाम आजाद जिनका नाम मुहीउद्दीन अहमद था एक बड़े स्कालर थे और आजाद भारत के प्रथम शिक्षा मन्त्री रहे। अंग्रेजों की हुकूमत थी। आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी। अंग्रेज हिन्दू—मुस्लिम एकता को तोड़ने की कोशिशों में लगे थे। मौलाना अबुल कलाम आजाद को नज़र बन्द रखा गया था। हिन्दू—मुस्लिम एकता और आजादी का सौदा किया जा रहा था। इस माहौल में मौलाना अबुल कलाम आजाद ने दिल्ली की एक आम सभा में जो बातें अपने खिताब में कहीं थीं उनका यह अंश सुनहरे अल्फाज में लिखे जाने के काबिल है। उन्होंने कहा:—

"अगर एक फरिश्ता आसमान से उतर आये और कुतुबमीनार की बुलन्दियों से ऐलान करे कि 'हिन्दू—मुस्लिम एकता से दस्तबरदार हो जाओ, चौबीसँ घंटे के अन्दर तुम को स्वराज मिल जायेगा'। मैं स्वराज से इन्कार कर दूंगा लेकिन मैं अपनी बात से एक इंच नहीं हटूंगा। अगर स्वराज देर से मिलता है तो इसका असर सिर्फ इण्डिया पर पड़ेगा जबकि हमारी एकता के खातिमे से पूरे मानव—संसार का नुकसान होगा।"

सज्जनो!

स्वतन्त्रता दिवस की पावन बेला पर आप सबको बधाई। हम सबके लिये यह दिन मुबारक हो। मालिक हमको सद्बुद्धि देवे कि हम सब मिलकर अपने देश की आजादी को अक्षुण बनाये रखने में उसी तरह कामयाब हों जिस तरह एक जुट होकर हमारे बड़ों ने इसे हासिल किया था।

तुम्हीं से नामे वतन है रौशन
तुम्हीं से शाने वतन दो बाला,
सलाम करता है ऐ शहीदो, अदब से झुककर तुम्हें हिमालः।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

नहाना, मिस्वाक करना, अच्छे कपड़े पहनना, ख़ुशबू लगाना और कोई मीठी चीज़ खाना फिर ईद की नमाज़ के लिए ईदगाह जाना सुन्नत है। मगर ईदगाह जाने से पहले अगर सदक़—ए—फ़ित्र रमज़ान में नहीं अदा किया है तो सदक़—ए—फ़ित्र अदा करें। ईदगाह जाते वक्त रास्ते में तकबीरे तशरीक़ अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाह अकबर व लिल्लाहिल हम्द आहिस्ता आहिस्ता पढ़ते हुए जाएं। ईद की नमाज़ जमाअत से पढ़ना मुसलमान मर्दों पर वाजिब है। ईद की नमाज़ में अह्नाफ़ के यहां ६ ज़ाइद तकबीरें भी कही जाती हैं। तीन तकबीरें पहली रकअ़त में नीयत और सना पढ़ने के बअ़्द कही जाती हैं और तीन तकबीरें दूसरी रकअ़त में अल्हम्दु और सूरत मिलाने के बअ़्द कही जाती हैं। शाफ़ई और हंबली हज़रात पहली रकअ़त में सात और दूसरी रकअ़त में पांच ज़ाइद तकबीरें कहते हैं अगर कोई हनफ़ी शाफ़ई या हंबली के पीछे ईदैन की नमाज़ पढ़े तो वह भी इमाम की तरह १२ ज़ाइद तकबीरें कहे।

ईद की नमाज़ जुमे की नमाज़ की तरह जहरन (आवाज़ से) पढ़ी जाती है। ईद में भी दो ख़ुत्बे पढ़े जाते हैं लेकिन यह ख़ुत्बे नमाज़ के बअ़्द पढ़े जाते हैं। आम तौर से देखा जाता है कि बड़ी ईदगाहों में सलाम फेरते ही लोग चल देते हैं जब कि ख़ुत्बा सुनना ज़रूरी होता है। जिस रास्ते से ईद गाह गयें हैं सुन्नत है कि वह रास्ता छोड़ कर दूसरे रास्ते से लौटें।

रिवायत से साबित है कि ईद के रोज़ हब्शियों ने अपना वरज़िशी प्रोग्राम पेश किया जिसे हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने भी मुलाहज़ा फ़रमाया और हज़रते आइशा ने भी हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के पीछे खड़ी होकर देखा लिहाज़ा ईद के रोज़ ऐसे प्रोग्राम पेश करना और उसमें शरीक होना जाइज़ है, जब कि वह प्रोग्राम फ़िल्मी गानों या नाच वग़ैरह के न हों। सनीमा और टीवी के गन्दे प्रोग्रामों से हरगिज़ हरगिज़ तफ़रीह न लेना चाहिए। ईद के रोज़ जहां अच्छा पहनने ख़ुशबू लगाने, जुलूस की शक्ल में ईदगाह में जमा होना मशरूअ़ है वहीं अच्छे खानों के इहतिमाम की भी गुंजाइश है और बड़ी महरूमी होगी उन दौलतमन्दों की जो अपने ग़रीब पड़ोसियों और अज़ीज़ों को इस ख़ुशी में शरीक न करें।

हड़ताल

अबू मर्ग़ूब

हड़ताल अ़वाम का जम्हूरी ह़क़ है। मगर यह ह़क़ क्या सभी अ़वाम का है? जी नहीं चलन के अनुसार यह ह़क़ तो सिर्फ़ सरकारी नौकरों का है या मिलों और कारख़ानों में काम करने वालों का है। शहर के सफ़ाई विभाग वाले हड़ताल कर देते हैं तो शहरियों का नातिक़ा बन्द हो जाता है। शहरों की सफ़ाई का जो निज़ाम (प्रबन्ध) है शहर वाले ख़ुद से करना चाहें तो भी नहीं कर सकते इसलिये आफ़िसर लोग सफ़ाई करने वालों के लीडरों से बात करते उनके मुतालबात पर ध्यान देते और जल्द मुआ़मले को सुलझाते हैं।

इसी प्रकार हर विभाग का हा़ल है, कभी बैंकों की हड़ताल है तो कभी रोडवेज़ वाले चक्का जाम किये हुए हैं तो कभी वकील लोग हड़ताल पर हैं यहाँ तक कि कभी डाक्टर लोग भी हड़ताल पर चले जाते हैं, अब मरीज़ मरे या जिये उनकी बला से।

ठीक है जिनको नौकरियाँ मिली हुई हैं वह तो हड़ताल करके अपनी मांगे हा़सिल कर लेते हैं लेकिन जिनको नौकरियां नहीं मिली हैं वह या तो मज़दूरी करते हैं या कोई कारोबार करते हैं या किसान हैं। क्या किसी ने सोचा है कि उन की भी कुछ मांगें हो सकती हैं या नहीं। उनको वक्त पर बिजली न मिलने पर सिंचाई दवाई में कितनी कठिनाइयां आती हैं। नहरों में वक़्त पर पानी न आने से कितना नुक़्सान हो जाता है या बेवक़्त नहरों के सैलाब से कितनी फ़स्ल बर्बाद होती है। आसमानी आफ़तों सूखा, बाढ़, पाला आदि से कितना नुक़्सान उठाना पड़ता है। मज़दूर आठ घन्टे काम करके अपनी मज़दूरी का ह़क़दार हो जाता है। कर्मचारी छे घन्टे या ज़ियादा से ज़ियादा आठ घन्टे कामकरता है, हफ़्ते में एक दिन छुट्टी मनाता है। त्योहारों, समारोहों, जैन्तियों आदि की पेट भर छुट्टियां मिलती हैं। लेकिन बेचारा किसान, पिछले वक़्त उठता है, जानवरों को चारा देता है, कभी तो एक घन्टा रात बाकी रहती है और वह खेत में पहुंच जाता है, सूरज चढ़े कोई बच्चा या उसकी बीवी खेत में नाश्ता पहुंचाती है। दोपहर तक हार्ड वर्क करने के पश्चात घर आता है। लेकिन उसको आराम कहाँ ख़ुद खाता पीता है, जानवरों को खिलाता है, दोपहर ढले फिर खेत पहुचता है और सूरज डूबने तक खेत में काम करता है। शाम को घर आया जानवरों को खिलाया ख़ुद खाया और सो रहा, बेशक उसकी नीन्द थकान के सबब साउन्ड सिलीप होती है लेकिन ज़रा कोई उसके घर की तरफ़ आके तो देखे तुरन्त उसकी आंख खुलेगी। शहरों की रखवाली तो पुलिस वाले करते हैं लेकिन दीहातों में किसान अपने घर और अपने जानवरों की रखवाली ख़ुद करते हैं।

अब जिन किसानों ने ट्रैक्टर आदि प्राप्त कर लिया है उनकी ड्यूटी तो और बढ़ गई है, पहले तो जानवरों के लिहाज में काम का वक्त मुकर्रर था अब जितना काम हो बराबर होता रहेगा इस लिये कि मशीन को तो तेल चाहिये और बस। किसान की यह चौबीस घन्टों की मेह्नत साल के सभी दिनों में है। त्योहार हो, घर में शादी हो तो क्या उसे जानवरों को खिलाने से भी फ़ुर्सत है? घर की रखवाली से भी फ़ुर्सत है? कदापि नहीं। इतनी सख़्त मेह्नत करने वाला जब मुख़्तलिफ क़िस्म की मुश्किलात से दोचार होता है तो क्या वह भी विरोध प्रदर्शन में हड़ताल करके अपना काम रोक सकता है? नहीं वह तो इसे सोच भी नहीं सकता। कानून में है कि बच्चों से काम लेना अपराध है क्या यह कानून किसान बच्चों पर भी लागू है? वह बेचारा सवेरे उठकर दरवाज़े की सफ़ाई करता है, जानवरों का गोबर घूर में डाल कर ही स्कूल जाता है, स्कूल से आकर अपने बाप भाई के कामों में हाथ बटाता है। कभी घर की गाय भैंसों और बकरियों को चराने भी ले जाता है। किसान की बीवी ज़रूरत पर खेत में भी काम करती है और जानवरों के लिये खेत से चारा लाती और कुट्टी तय्यार करती है गरज़ कि पूरा घर काम से लगा हुआ है, इन सबका अगर कमसे कम वेतन लगाया जाए तब भी खेत के ग़ल्ले से उसका आधा भी मिलना मुश्किल है लेकिन बेचारा कभी हड़ताल की सोच भी नहीं सकता इसलिये कि हड़ताल से उसको कुछ मिलना नहीं बल्कि और घर से देना है।

अब मज़दूर को ले लीजिये जिसके पास न खेत है, न नौकरी, न कोई कारोबार वह ईंट गारा ढोता है, फावड़ा कुदाल चलाता है, कुली का

काम करता है, राज है, बढ़ई है, बुनकर हैं, किसी तरह भी मेहनत करके रोज़ी कमाता है, जिस दिन उसको काम नहीं मिलता उसकी आमदनी रुक जाती है क्या यह मज़दूर या कारीगर कभी हड़ताल की सोच सकते हैं? कदापि नहीं। इन में तो कुछ ऐसे हैं जिनको काम न मिले तो शाम की रोटी भी न मिल सके लेकिन जो ज़ियादा कमाकर बैंक बैलेन्स किये हुए हैं वह भी हड़ताल करके अपनी आमदनी रोकना नहीं चाहते और कभी भी हड़ताल की नहीं सोचते।

व्यापारी लोग दो तरह के हैं एक तो वह जो इतना ही बचा पाते हैं जिससे उनका गुजर हो सके, दूसरे ऐसे हैं जिनके रोज़ाना लाखों के वारे न्यारे होते हैं क्या इनमें से कोई भी हड़ताल चाहता है? कदापि नहीं। हाँ जब कर्मचारी लोग इनसे जबरदस्ती हड़ताल करवाते हैं तो मजबूरन दुकान बन्द कर देते हैं लेकिन बन्द करना नहीं चाहते चुनांचि ऐसे मौके पर चोरी छुपे अपना कारोबार चलाते पाए जाते हैं।

हाँ अस्पतालों में हड़ताल होने पर डाक्टर गाइब हो जाते हैं लेकिन क्या प्राइवेट डाक्टर जो सिर्फ़ मरीज़ देखकर नुस्ख़ा लिखते हैं और दो सौ तीन सौ पर मरीज़ लेते हैं वह भी हड़ताल करते हैं? कदापि नहीं।

बस हड़ताल तो सिर्फ़ सरकारी कर्मचारी करते हैं जिसका सीधे नुक्सान अ़वाम को होता है, सरकार को अगर कुछ नुक्सान पहुंचा भी तो यह बस समझ का फेर है लोकतंत्र में सरकार का नुक्सान पब्लिक का नुक्सान है, इस तरह कर्मचारियों की हड़ताल से चाहे उनको कोई फ़ाइदा न पहुंचे लेकिन उनको नुक्सान तो कुछ भी नहीं पहुंचता, नुक्सान पहुंचता है तो सरकार को जो अ़वाम ही का नुक्सान है या उन अ़वाम को नुक्सान पहुंचता है जिनकी मज़दूरी और मेहन्ताने की कोई गारन्टी नहीं, जिनकी आमदनी कर्मचारियों से कहीं कम है, मगर वह हड़ताल करने का ख़्वाब भी नहीं देख सकते अतः कर्मचारियों के हड़ताल के हक़ पर कानून दानों को अवश्य सोचना चाहिये ताकि दूसरे अ़वाम की हक़ तल्फ़ी न हो।

(पृष्ठ २७ का शेष)

ना मिले या नुक्सान करे तो ग़ुस्ल में भी तयम्मुम करना जाइज़ है और ग़ुस्ल का तयम्मुम भी वुज़ू के तयम्मुम ही की तरह होगा बस नीयत हो कि ग़ुस्ल की पाकी हासिल करने के लिए तयम्मुम करता हूं। लेकिन याद रहे कि तयम्मुम से जिस्म पाक होगा नापाक कपड़ा पाक न होगा, जिस्म पर लगी नजासत भी दूर करना होगी।

प्रश्न : कभी रेल में पानी भी नहीं मिलता और मिट्टी भी नहीं मिलती ऐसी सूरत में नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तर : नमाज़ बे वुज़ू पढ़ें फिर पानी मिलने पर नमाज़ दुहरा लें। यह भी जाइज़ है कि उस वक़्त न पढ़ें जब पानी मुहय्या हो तब छूटी नमाज़ें अदा करें।

प्रश्न : तयम्मुम किन बातों से टूटता है?

उत्तर : जिन बातों से वुज़ू टूटता है उनसे तयम्मुम भी टूटता है, पानी मिल जाने या पानी से नुक्सान का ख़तरा दूर हो जाने से भी तयम्मुम टूट जाता है।

प्रश्न : एक शख़्स का आप्रेशन हुआ है, होश हवास दुरुस्त हैं, हाथ में सूई लगी है, गुलूकोज़ चढ़ रहा है, जो बहुत ज़रूरी है, उठना बैठना मना है, वुज़ू नहीं कर सकता नमाज़ किस तरह अदा करे?

उत्तर : ऐसी सूरत में वक़्त पर बे वुज़ू इशारों से नमाज़ अदा करेंगे फिर क़ुदरत होने पर वुज़ू करके इशारों से पढ़ी हुई नमाज़ों को दुहरा लेंगे।

प्रश्न : रेल में इतनी भीड़ है कि न तो वुज़ू के लिए जाना मुम्किन न नमाज़ अदा करने की कोई जगह है ऐसी सूरत में नमाज़ कैसे अदा करें?

उत्तर : ऐसी सूरत में अपने वक़्त पर नमाज़ अपनी जगह पर इशारों से अदा करें फिर सुहूलत मिलने पर वुज़ू कर के उन इशारों से पढ़ी हुई नमाज़ें दुहरा लें।

प्रश्न : रेलों, बाजारों या आम भीड़ भाड़ की जगहों में बम दागना कैसा है?

उत्तर : लड़ाई के दौरान दुश्मन पर बम मारना तो दुरुस्त हो सकता है, लेकिन जिन से लड़ाई नहीं उन पर बम मारना या रेलों के स्टेशनों पर बाज़ारों में, हवाई अड्डों पर बम दाग़ना जिस से बेगुनाहों की जानें जाएं, सरकार का या लोगों का माली नुक्सान हो लोगों में ख़ौफ़ व दहशत पैदा हो नाजाइज़ है, हराम है, बड़ा सख़्त गुनाह है। ऐसा गुनाह है जिसमें बन्दों की हक़ तल्फ़ी है जो तौबा से भी मुआ़फ़ न होगी, जब तक वह न मुआ़फ़ करें जिन का हक़ मारा गया। हम ऐसे बम धमाका करने वालों से नफ़रत का एअ़लान करते हैं। उनका तअ़ल्लुक़ चाहे जिस समुदाय से हो हम उन की मज़म्मत करते हैं।

ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं आज़ाद हैं अअ़माल में महबूस नहीं हैं

अबू मर्गूब

हम देश की रखवाली में हरगिज़ नहीं पीछे
है कांपता दुशमन हमारी हांक के आगे
तलवार हो बन्दूक़ हो या बम का धमाका
हर ह़ाल में पाओगे हमें आगे ही आगे
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद है अअ़माल में मह़बूस नहीं हैं

मैदान में हम पुश्त दें मुम्किन ये नहीं है
दुशमन को अपना राज़ दें मुम्किन ये नहीं है
दुशमन से साज़ बाज़ तबीअ़त नहीं अपनी
हम शेर हैं रूबाह हों मुम्किन ये नहीं है
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं अअ़माल में मह़बूस नहीं हैं

फ़ितरत ने तिजारत का सिखाया है क़रीना
ताजिर की सदाक़त का दिखाएंगे नमूना
मैदाने तिजारत में कोशिश यह करेंगे
हर मुल्क के साहि़ल पे हो भारत का सफ़ीना
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं अअ़माल में मह़बूस नहीं हैं

मक़्सूद तिजारत से हैं मख़्लूक़ की ख़िदमत
मक़्सूद फ़क़त नफ़अ़ की तिजारत पे है लअ़नत
हम ख़िदमते मख़्लूक़ में कुछ रिज़्क़ भी लेंगे
और लेंगे तिजारत से बहुत रह़मतो बरकत
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं अअ़माल में मह़बूस नहीं हैं

हैं खेत हमारे हम उनमें काम करेंगे
हम सुब्ह़ वां पहुंचेगे वहीं शाम करेंगे
घन्टों का तो पाबन्द है मज़दूर फ़क़त आठ
और हम तो ज़रा रात में आराम करेंगे
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं अअ़माल में मह़बूस नहीं हैं

तिकनिक नई खेती में हम तो आ़म करेंगे
आलाते जदीदा से अब हम काम करेंगे
ग़ल्ले की कमी मुल्क में होने नहीं देंगे
इस पेशा–ए–आली को न बदनाम करेंगे
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं आअ़माल में मह़बूस नहीं है

ह़क़ नौकरी का हम अदा करने में हैं मशहूर
ह़ाकिम हों कि ह़ारिस हों हर ह़ाल में मसरूर
हम वक़्त के पाबन्द हैं मिहनत शिआ़र हैं
और काहिली सुस्ती से तो रहते हैं बहुत दूर
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं अअ़माल में मह़बूस नहीं हैं

ह़क़ परस्ती शेवा अपना हो तरक्की या न हो
है तरक़्क़ी वो ही अच्छी जिसमें ह़क़ तल्फ़ी न हो
सादा खाना और पहन्ना ख़ल्क़ की ख़िदमत है काम
हर किसी का ह़क़ अदा हो, नाख़ुशी रब की न हो
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं अअ़माल में मह़बूस नहीं हैं

है वफादारी वतन से दीन और ईमां के साथ
है वतन वो ही हमारा जिसमें हो ईमां के साथ
युस्र हो या उ़स्र हो ईमां पे हम हैं मुस्तक़ीम
गौलियों की बाड़ पर भी पाओगे ईमां के साथ
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं अअ़माल में मह़बूस नहीं हैं

सुन लो वतन के भाइयो हम से न धोखा खाओगे
तामीर में इस देश की अपने से आगे पाओगे
शर्त है ईमां हमारा तुमसे दुख पाए नहीं
भूल इसमें की अगर सुन लो बहुत पछताओगे
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं अअ़माल में मह़बूस नहीं हैं

शिक्षक दिवस 2006 पर विशेष
एक अध्यसापक का अध्यापकों के नाम सम्बोधन

एम० हसन अंसारी

प्रिय अध्यापक बन्धुओं!

मानव-विकास के इतिहास में दो घटनायें ऐसी घटित होती रही हैं जिनका समय निश्चित कर पाना कठिन है- एक नींद का आना, दूसरे किसी समाज के पतन की घटना। ये ऐसे दबे पाँव आते हैं कि इनका आभास तब हो पाता है जब इनकी घुसपैठ हो चुकी होती है और तब इन पर काबू पाना कठिन हो जाता है।

कोई सयमाज जब पत्नोन्मुखी होता है तो 'खाओ पियो मस्त रहो' की लोरी उसे ऐसी गहरी नींदी सुला देती है कि उसके पुनर्जागरण में वर्षों और कभी कभी सदियों का समय लग जाता है, कुछ ऐसी ही दशा आज हमारे समाज की है। जब किसी समाज में बुराइयाँ अच्छाइयों पर हावी हो जाती हैं, उनका वर्चस्व कायम हो जाता है और समाज में विकार तथा बिगाड़ पैदा हो जाता है, निराशा का दौर दौरा होता है, ज्ञानी अज्ञानता के पालने में किलकारियाँ भरता है, शराफत और सज्जनता लुप्त प्राय हो जाती है, आत्मा मर सी जाती है, जीने का मज़ा जाता रहता है; तो ऐसे में मानवता के उद्धार के लिए समाज सुधार के लिए लोगों की निगाहें समाज के दो वर्गों की ओर उठती हैं- एक बुद्धिजीवी वर्ग दूसरे धार्मिक वर्ग।

अध्यापक प्रायः धार्मिक भी होता है और बुद्धिजीवी भी। वह समाज को दिशा प्रदान करता है, छात्र उसकी नकल करते हैं। उनके मन-मस्तिष्क अध्यापक के क्रिया क्लापों से प्रभावित होते हैं। अब यह हमारे ऊपर है कि हम अपनी भावी पीढ़ी पर कैसी छाप छोड़ना चाहते हैं।

तुलसीदास ने 'जीवन-ब्रह्म बिच माया जैसे' कहकर हमको सचेत किया था कि देखो जीव के जंजाल में न फंस जाना, किन्तु हम बच न सके और ऐसे फंसे कि फंसकर रह गये और बहम को भुला बैठे। कबीर ने बाजार में खड़े होरक ''सबकी खैर'' की माँग की थी, हम अपनी माँगों में कबीर से कई गुना आगे निकल गये, और क्यों न हो ऐसा, हम ठहरे विज्ञान के ज्ञानी लोग। नवयुग के निर्माता, जग के भाग्यविधाता, मानवता के कर्णधार; किन्तु अपने से बेखबर!

जग के भाग्यविधाता उठ,
नव युग के निर्माता उठ,
गहरी नींद से श्राता उठ।

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : ज़ैद देश के बाहर है, बीवी से फ़ून पर बात हो रही थी कि कुछ ग़ुस्सा गर्मी आ गई उसने फ़ून ही पर कहा मैं ने तुझे तलाक़ दिया। मेरा घर छोड़ दे अपने मैके चली जा, उस की बीवी अपने मैके चली गई। एक हफ़्ते के बाद ज़ैद ने अपने दोस्तों को फ़ून की इस गुफ़्तुगू का ज़िक्र किया और कहा कि मैंने एक तलाक़ दी थी अब रुजूअ़ किया। दोस्तों ने पूछा कि आपने जो कहा कि अपने मैके चली जा, मेरा घर छोड़ दे, क्या इन जुम्लों से भी आप की मुराद तलाक़ ही थी? ज़ैद ने कहा हरगिज़ नहीं अगर मुझे एक से ज़ियादा तलाक देना होती तो मैं एक से ज़ियादा तलाक़ कह देता। मैंने तो यह जुम्ले इस लिये कहे थे ताकि उस को और उसके घर वालों को ख़र्च बर्दाश्त करना पड़े तो उससे सबक़ लें इस सारी बात की इत्तिलाअ़ जैद के दोस्तों और अज़ीज़ों से ज़ैद की बीवी को हो गई, अब शरई हुक्म क्या है?

उत्तर : अगर ज़ैद ने अपनी बीवी को अपने मैके जाने और अपना घर छोड़ने के जुम्ले, तलाक़ की नीयत से नहीं कहे सिर्फ़ तंबीह के तौर पर कहे और एक तलाक़ सरीह (स्पष्ट) दी तो एक ही तलाक़ पड़ी और रूजूअ़ कर लेने से ज़ैद की बीवी फिर जैद की बीवी हो गई उसको ज़ैद के साथ रहना चाहिए।

प्रश्न : रेल के लम्बे सफर में मिट्टी का ढेला रख लिया कि अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता तबीअ़त ख़राब हुई और तयम्मुम की ज़रूरत पड़ी तो उससे तयम्मुम कर लेंगे, या रेल के डिब्बे में अगर पानी न हुआ और नमाज़ का वक़्त जाने का ख़तरा हुआ तो उस ढेले पर तयम्मुम कर लेंगे चुनांचि ऐसी ज़रूरत आ गई हम तीन आदमी थे हम लोगों ने एक ही मिट्टी के ढेले पर बारी बारी तयम्मुम कर के नमाज़ अदा की लेकिन हम लोगों को इश्काल हुआ कि एक ही ढेले पर तीन आदमियों का तयम्मुम करना सहीह होगा या नहीं, शरई हुक्म बताइये।

उत्तर : मिट्टी के ढेले पर हनफ़ी मस्लक में तयम्मुम जाइज़ है और एक ही ढेले पर बार–बार तयम्मुम करना या एक ही ढेले पर बारी बारी से कई आदमियों का तयम्मुम करना भी जाइज़ है। लेकिन याद रहे कि रेल के जिस डिब्बे में सफ़र कर रहे हैं उसमें पानी नहीं है तो दूसरे डिब्बों में पानी तलाश करना जरूरी है। पानी तलाश किये बिना तयम्मुम करना दुरुस्त न होगा। पानी की तलाश में कभी भीड़ भाड़ के सबब दूसरे डिब्बे में जाना बहुत मुश्किल होता है। अगर इस तरह की मजबूरी हो तो तयम्मुम दुरुस्त होगा।

प्रश्न : क्या मिट्टी के बधने पर तयम्मुम किया जा सकता है?

उत्तर : हां ह़नफ़ी मस्लक में मिट्टी के लोटे पर तयम्मुम जाइज है, ह़नफ़ी मसलक में हर पाक मिट्टी, पत्थर, कंकर, रेत, चूना, मिट्टी की ईंट कच्ची हो या पक्की, गेरू, मिट्टी, पत्थर या ईंट की दीवार, मिट्टी के कच्चे पक्के बर्तन जब कि उन पर आईल पेंट न चढ़ा दिया गया हो इन सब पर तयम्मुम जाइज़ है अलबत्ता दूसरे इमामों क़े नज़दीक बारीक पाक मिट्टी जैसे गर्द या रेत ही पर तयम्मुम जाइज़ होगा।

प्रश्न : तयम्मुम करना कब जाइज़ है?

उत्तर : जब पानी मौजूद न हो या मौजूद तो हो लेकिन उस के मिलने में दुश्वारी हो या बीमारी में पानी से नुक़्सान पहुंचने का डर हो तो तयम्मुम जाइज़ है।

प्रश्न : बीमारी में पानी का नुक़्सान कैसे मालूम करेंगे?

उत्तर : डाक्टर, तबीब, बेद वग़ैरह बताएं कि पानी से नुक़्सान होगा, या अपना तजरिबा हो कि पानी से वुज़ू करने से नुक़्सान पहुंचेगा तो तयम्मुम जाइज़ होगा।

प्रश्न : तयम्मुम किस तरह किया जाता है?

उत्तर : तयम्मुम में नीयत फ़र्ज़ है, नीयत के बिना तयम्मुम न होगा। नीयत यह है कि दिल में इरादा करे कि मैं पाकी ह़ासिल करने के लिए तयम्मुम करता हूं। फिर पाक मिट्टी पर खुली अंगुलियों के साथ दोनों हाथ मारकर मुंह पर ठीक से मले यह दूसरा फ़र्ज़ है, फिर पाक मिट्टी पर हाथ मार कर बाएं हाथ से दाहिना हाथ कुहनियों समेत ठीक से मले और दाहिने हाथ से बायां हाथ कुहनियों समेत ठीक से मले यह तीसरा फ़र्ज़ हुआ बस तयम्मुम मुकम्मल हो गया।

प्रश्न : क्या ग़ुस्ल का भी तयम्मुम होता है?

उत्तर : हां ग़ुस्ल का भी तयम्मुम होता है यानी ग़ुस्ल की ह़ाजत हो और पानी

(शेष पृष्ठ २४ पर)

रमज़ान के अन्तिम दस दिन

मौलाना अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बास नदवी

दो चार दिन की बात और रह गई है। यह गिन्ती के दिन भी समाप्त हो जाएंगे। रमज़ान तो फिर आएंगे और कियामत से पहले तक आते रहेंगे। लेकिन यह कौन जानता है कि हम भी इस धरती पर उसका स्वागत करेंगे या समाधि में मनों मिट्टी के नीचे दबे होंगे। दो चार नहीं सहस्त्रों जन बीते रमज़ान में आप के साथ थे और आज क़ब्र में आराम कर रहे हैं। लोग रमज़ान को बिदा करते हैं जबकि कितने हैं जिनको रमज़ान बिदा कर रहा है वह अगला रमज़ान न पा सकेंगे। उप महाद्वीप हिन्द व पाक में रमज़ान के अन्तिम जुमा को "अलविदा" नाम से एक विदाई उत्सव मनाया जाता है। ईद से पहले ईद की भूमिका हो जाती है। कुछ लोग इस जुमे में भी नये जोड़े सिलवाते हैं। न जाने यह प्रथा कहां से आई, अ़रब के लोग इस से अपरिचित हैं। जो भी हो यह प्रथा वैध हो अथवा अवैध, इस में उत्सव के मनाने वालों में एक संख्या ऐसी अवश्य होती है जिस का ज्ञान केवल अल्लाह तआ़ला ही को है वह सचमुच रमज़ान से बिदा हो रही होती है, अगले रमज़ान से वह वंचित रहेगी। अगर हम भी इस वास्तविकता को सामने रखते हुए सोचें तो बात अनुचित न होगी कि हो सकता है कि यह अपने जीवन का अन्तिम रमज़ान हो। अगले रमज़ान में हम कहां और कहां यह शुभ दिन और शुभ रातें, कहाँ यह कामना पूर्ति दिन, कहां यह स्तुति वाली रातें, यह भोर के मंगलमय क्षण और प्रातः काल का मन मोहक कोलाहल, इफ्तार के जीवनदायक क्षण तथा नमाज़ व तरावीह़ की व्यवस्था, क़ुर्आन पाठ (तिलावत) में ध्यान तथा ईश प्रार्थनाओं (दुआओं) में मनोयोग (दिलजमई) ऐसा लगता है जैसे कृपा-समुद्र उमड़ उमड़ कर आ रहाहै तथा क्षमा वर्षा चप्पे चप्पे पर हो रही है। लम्बे काल की सूखी आखें नमी को तरसी हुई भीगी भीगी सी रहने लगी थीं, दुर्भाग्य तथा सियाही का मारा दिल नम्रता का अभिलाषी, प्रकाश का इच्छुक हो गया था क्या यह दुआएं याद न आएंगी, क्या यह रातें भुलाई जा सकेंगी?

रमज़ान मुबारक दुआओं और मुनाजातों का महीना है। यूं तो हर दिन दुआ का दिन और हर रात इस्तिग़फ़ार व मुनाजात की रात है, मगर रमज़ान इस का ख़ास मौसिम है। यह ईमान की फ़स्ले बहार का ज़माना है, यह वह दिन हैं जब दर्याए रह़मत जोश में हैं चन्द गिने हुए दिन हैं, थोड़े दिन रह गये हैं इस के बाद आप अल्लाह वालों से सुनेंगे। अब के दिन बहार के यूं ही गुज़र गये।

धार्मिक क्रान्ति का युग

प्रो० श्री नेत्र पाण्डे

(पिछले से आगे)

(४) ब्राह्मणों की प्रधानता— वैदिक धर्म में ब्राह्मणों की प्रधानता थी जो कालान्तर में सीमा का उल्लंघन कर गई और जन–साधारण्ध के लिए असह्य हो गई ब्राह्मणों को विद्याध्ययन करने का एकाधिकार था वही धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या कर सकते थे और उन्हीं की सहायता से यज्ञ किये जा सकते थे। वास्तव में जन्म से मृत्यु तक की जितनी धार्मिक क्रियाएं की जाती थीं वे सब ब्राह्मणों के ही माध्यम से की जा सकती थीं। राजनीति में उनका बड़ा जोर था। राजा लोग उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे और राजनीतिक मामलों में भी उनका परामर्श लिया करते थे। समाज में उनका स्थान सर्वोपरि था वे सबसे श्रेष्ठ तथा कुलीन समझे जाते थे। और उन्हें अनेक प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त थे। कालान्तर में ब्राह्मणों के विरुद्ध एक भयंकर प्रतिक्रिया आरम्भ हुई जिसका नेतृत्व क्षत्रियों ने ग्रहण किया।

(६) जाति–प्रथा की जटिलता— क्रान्ति विस्फोट में जाति–प्रथा से भी बड़ा योग मिला। ऋग्वैदिक काल में व्यवसाय के आधार पर आर्यों ने वर्ण–व्यवस्था की स्थापना की थी जिससे समाज का संचालन सुचारु–रीति से हो सके। परन्तु उत्तर–वैदिक काल में वर्ण–व्यवस्था जाति व्यवस्था में बदल गई जिसका निश्चय व्यवसाय से नहीं वरन् जन्म से होने लगा। धीरे–धीरे जाति–प्रथा जटिल होती गई और उसके बन्धन बड़े कड़े हो गये। उसमें ऊँच–नीच तथा छूत–छात की भावना बढ़ने लगी। ऊँची जाति वाले नीची जाति वालों के साथ नाना प्रकार के अत्याचार करने लगे जिससे शूद्रों की दशा बड़ी सोचनीय हो गई। जब भारतीय समाज में बड़े–बड़े चिंतक तथा सुधारक उत्पन्न हुए तब शूद्रों की दयनीय दशा को देखकर हृदय दया से पिघल उठा और उन्होंने इस सामाजिक कुव्यवस्था के विरुद्ध क्रान्ति कर दी।

(७) नये मार्ग की खोज— वैदिक काल के ब्राह्मण समायज को जिस मार्ग पर ले जाना चाहते थे वह हिंसा, बलि तथा यज्ञ का मार्ग था परन्तु जनता अब इस मार्ग पर चलने के लिए उद्यत न थी। अतएव नये मार्ग की खोज आरम्भ हो गई! यह कार्य उपनिषद् काल से ही आरम्भ हो गया था और तापस तथा ज्ञान मार्ग को ढूंढ निकाला गया था परन्तु वह दोनों ही मार्ग सर्व–साधारण के लिए कठिन थे। न तो साधारण जनता जंगलों में जाकर तपस्या कर सकती थी और न चिन्तन द्वारा ज्ञान की खोज कर सकती थी। अतएव उसके लिये इससे भी अधिक सरल मार्ग की आवश्यकता थी। फलतः छठी शताब्दी ई० पू० के दार्शनिक तथा विचारकों ने दो अत्यन्त सरल मार्ग ढूंढ निकाले। इसमें से एक मार्ग था भक्ति तथा उपासना का और दूसरा मार्ग था सदाचार तथा सत्कर्म का। भक्ति–मार्ग पर चलने वाले लोग जैन तथा बौद्ध कहलाये। अब इनका परिचय प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

जैन धर्म— जैन संस्कृत भाषा के 'जिन' शब्द सेनिकला जिसका अर्थ होता है विजेता। परन्तु प्रत्येक विजेता को जिन नहीं कहते हैं। जिन केवल उस विजेता को कहते हैं जिसने इन्द्रियों को अपने वश में करके आध्यात्मिक विजय प्राप्त कर ली हो। इस व्याख्या के अनुसार जैन उन लोगों को कहते हैं जो किसी 'जिन' अर्थात् जितेन्द्र के अनुयायी हों और जिस धर्म का ये लोग अनुसरण करते हैं उसे जैन–धर्म कहते हैं। जैन महात्मा निर्ग्रन्थ भी कहलाते हैं निर्ग्रन्थ का अर्थ होता है बिना ग्रन्थों के अर्थात् बन्धन–मुक्त। दूसरे शब्दों में निर्ग्रन्थ उन महात्माओं को कहते हैं जिन्होंने समस्त सांसारिक बन्धनों को तोड़ दिया हो। जैन–धर्म के प्रवर्तकों को तीर्थंकर कहते हैं। तीर्थंकर संस्कृत के दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् तीर्थ तथा कर। तीर्थ संस्कृत की 'तृ' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है पार लगाना और तीर्थ उन विधियों तथा नियमों को कहते हैं जो मनुष्य को संसार–सागर से पार लगा देते हैं। 'कर' का अर्थ होता है करने वाला अथवा बनाने वाला। अतएव तीर्थंकर उन महापुरुषों को कहते हैं जो ऐसी विधियों अर्थात् नियमों को बनाते हैं जिनके द्वारा मनुष्य संसार–सागर को पार कर सकता है। तीर्थ का अर्थ गुरु

अथवा पथं–प्रदर्शक भी होता है। अतएव तीर्थकर उन महान् गुरुओं अथवा पथ–प्रदर्शकों को भी कहते हैं जो इस भव–सागर से पार करने का मार्ग प्रदर्शित करते हैं। जैन लोग इस प्रकार के २४ तीर्थकरों में विश्वास करते हैं जिनमें से प्रमुख तीन का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जायगा।

जैन तीर्थंकर– यद्यपि सामान्यतः महावीर स्वामी जैन–धर्म के प्रवर्तक माने जाते हैं परन्तु वास्तव में वे इस धर्म के चौबीसवें तथा अनितम तीर्थकर थे और उनके पहले तेईस अन्य तीर्थकर हो चुके थे। इनके प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव माने जाते हैं जो जम्बू दीप के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट थे। वृद्धावस्था में अपने पुत्र भरत को अपना राज–पाट सौंप कर वे स्वयं तीर्थकर हो गये थे। ऋषभदेव के बाद के इक्कीस तीर्थकरों के विषय में कुछ ज्ञात नहीं है। जैनियों के तेइसवें तीर्थकर पार्श्वनाथ थे जो महावीर से २५० वर्ष पहले हुए थे। पार्श्वनाथ बनारस के राजा अश्वसेन के पुत्र थे। तीस वर्ष की अवस्था में उनमें वैराग्य उत्पन्न हो गया और उन्होंने सन्यास ग्रहण कर लिया। चौरासी दिनों की घोर तपस्या के उपरान्त उन्हे ज्ञान प्राप्त हो गया और अपने इस ज्ञान का प्रचार उन्होंने प्रारम्भ कर दिया। वे सत्तर वर्ष तक घूम–घूम कर अपने मत का प्रचार करते रहे। अन्त में सौ वर्ष की आयु में पार्श्वनाथ नामक पर्वत पर उनकी मृत्यु हो गई। पाशर्वनाथ के चार प्रमुख उद्देश्य थे– अर्थात् अहिंसा (जीवों की हत्या न करना), सत्यभाषण, अस्तेय (चोरी न करना) तथा अपरिग्रह (संपत्ति–त्याग)। वे चार प्रतिज्ञाएं कहलाती हैं जो प्रत्येक जैन–भिक्षु को लेनी पड़ती थीं। जैन–धर्म के चौबीसवें तथा अन्तिम तीर्थकर महावीर स्वामी थे जो जैन–धर्म के वास्तविक प्रवर्तक माने जाते हैं। अतएव इनके जीवन का विस्तृत परिचय दे देना आवश्यक है।

महावीर स्वामी का जीवन परिचय– महावीर स्वामी का बचपन का नाम वर्द्धमान था। बाद में जब उन्होंने अपने अतुल पराक्रम का परिचय दिया तब वे महावीर कहलाये। इनका जन्म ईसा से लगभग ५६६ वर्ष पूर्व वैशाली के कुण्डग्राम में हुआ था जो उत्तरी बिहार के वर्तमान मुजफ्फरपुर जिले में स्थित है। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ था जो क्षत्रिय राजा थे। उनकी माता का नाम त्रिशला था जो वैशाली के राजा चेटक की बहिन थी। चेटक की कन्या छेलना का विवाह मगध के राजा बिम्बसार के साथ हुआ था। इस प्रकार महावीर का संबंध कई शक्तिशाली राज–वंशों के साथ था। उनका विवाह यशोदा नामक राजकुमारी के साथ हो गया था जिससे एक कन्या भी हुई थी। परन्तु गृहस्थाश्रम में उनका मन न लगा और उन्होंने सन्यास ले लेने का निश्चय कर लिया। फलतः तीस वर्ष की आयु मूं वे घर से बाहर तपस्या के लिए चले गये। जो वस्त्र वे घर से पहिन कर निकले थे उसी को वे तेरह महीने तक पहिने रहे। उसके बाद जब वे फटकर गिर गये तब वे नंगे हो सत्य की खोज में इधर–उधर घूमते रहे। बारह वर्ष तक उन्होंने इतनी कठिन तपस्या की कि उनका शरीर सूख कर कांटा हो गया। तापस–जीवन के तेहरवें वर्ष एक नदी के तट पर शालवृक्ष के नीचे उन्हें 'कैवल्य' (निर्मल) ज्ञान प्राप्त हो गया। उसी समय से वे अर्हत (पूज्य), जिन (विजेता) निर्ग्रन्थ (बन्धन–रहित), महावीर (परम प्रतापी) आरसदि नामों से प्रसिद्ध हुए। उसके बाद तीस वप्र तक वे कोशल, मगध तथा पूर्व के प्रदेश में घूम–घूम कर अपने धर्म का प्रचार करते रहे। अन्त में ७२ वर्ष की आयु में ५२७ ई० पू० में वर्तमान पटना ज़िले के पावापुरी नामक स्थान में इनका परलोकवास हो गया।

जैनधर्म के सिद्धान्त– यद्यपि महावीर स्वामी को जैन–धर्म का जन्म–दाता माना जाता है परन्तु वास्तव में ऐसी बात न थी। उन्हें जैन धर्म का केवल सुधारक ही समझना चाहिए। क्योंकि उन्होंने उन सिद्धान्तों में सुधार तथा परिवर्तन किया जिनका प्रतिपादन उनके पहले जैन महात्मा पार्श्वनाथ ने किया था। पार्श्वनाथ ने केवल चार सिद्धान्तों अर्थात अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना) तथा अपरिग्रह (सम्पत्ति न संग्रह करना) का प्रतिपादन किया था। महावीर ने इसमें पांचवां सिद्धान्त अर्थात् ब्रह्मचर्य भी जोड़ दिया और अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रह्मचर्य के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। महावीर स्वामी को जैन–धर्म का प्रवर्तक मानने का कारण यह प्रतीत होता है कि जैन–तीर्थकरों में उनका व्यक्तित्व सर्वश्रेष्ठ था। उन्होंने बड़ी वीरता के साथ सांसारिक बिघ्न–बाध ाओं का सामना किया था, इसी से वे महावीर कहलाये। उन्होंने संसार–रूपी मोह तथा अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली थी, इसी से वे जिन अर्थात् विजयी कहलाते हैं। चूंकि उन्होंने एक ऐसे मार्ग का पता लगाया जिस पर चलकर लोग भवसागर को पार कर मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं अतएव

उनकी गणना जेन–तीर्थकरों में होती है। महावीर स्वामी की शिक्षाओं का सारांश जिसमें जैन–धर्म के मूल सिद्धानत निहित हैं, जो निम्नांकित हैं:–

(१) सृष्टि की नित्यता में विश्वास– जैनियों के विचार में यह सृष्टि अनादि तथा अनन्त है अर्थात् न इसके प्रारम्भ का पता है और न कभी इसका अन्त होता है। न कोई इसका बनाने वाला है न कोई इसे बिगाड़ सकता है। इसमें संदेह नहीं कि इसका उत्थान और पतन होता रहता है। परन्तु इसका कभी अन्त नहीं होता और यह निरन्तर चलती है। जैनी इस बात को नहीं मानते कि ईश्वर इस सृष्टि की रचना करता है और इस पर नियंत्रण रखता है।

(२) सृष्टि का जीव तथा अजीव संयोग से निर्माण– जैनियों का विश्वास है कि इस सृष्टि का निर्माण जीव तथा अजीव इन दो तत्वों के संयोग से होता है। इनके विचार में जीव तथा अजीव दोनों स्वतन्त्र तथा नित्य है। जीव चेतन तत्व है और अजीव जड़ तत्व है। वहाँ पर जीव का तात्पर्य आत्मा से है। जैनियों के विचार में जीव ने केवल मनुष्यों तथा पशु–पक्षियों वरन् पेड़–पौधे, पत्थरों तथा जल में भी पाया जाता है।

(३) जीव की भौतिक तथा आध्यात्मिक प्रवृत्तियों में विश्वास– जैनियों के विचार में मनुष्य की दो प्रकार की प्रवृत्तियां होती हैं– एक भौतिक और दूसरी आध्यात्मिक। उसकी भौतिक प्रवृत्ति विनाशमयी होती है जो उसे बुरे–बुरे कर्मों में फँसाती जाती है और उसे विनाश की ओर ले जाती है परन्तु उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति अमर है जो उसे सत्कर्मों की ओर ले जाती है और अन्त में उसे सांसारिक बन्धनों से मुक्त कर देती है। अतएव इसी आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अनुसरण करना चाहिए और इसी के विकास का सदैव प्रयत्न करना चाहिए।

(४) कर्म–बन्धन में विश्वास– जीव अथवा आत्म का उसके कर्मों के साथ अटूट सम्बन्ध है। जीव अपने विशुद्ध रूप में अत्यन्त निर्मल तथा आनन्दमय रहता है परन्तु कलान्तर में वह कर्मों के बन्धन में पड़ जाता है। न केवल इस जन्म के कर्मों का वरन् पूर्व–जन्म के कर्मों का प्रभाव जीवन अथवा आत्मा पर पड़ता है। सांसारिक विषय वासनाओं से आकृष्ट होकर मनुष्य कर्म करता है। आत्मा उसी कर्म के बन्धन में बंध जाती है। इन बन्धनों को मुक्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्न करना पड़ता है और कभी–कभी कई जन्म लग जाते हैं। जब आत्मा धार्मिक बन्धनों को तोड़ देती है तब वह सुख–दुख से मुक्त हो जाती है और उसे मोक्ष मिल जाता है।

(५) कर्मों को रोकने तथा हटाने की आवश्यकता– जैनियों का कहना है कि राग, द्वेष, मोह आदि से प्रेरित होकर मनुष्य विभिन्न प्रकार के कर्मों को करता है। उन कर्मों का प्रवाह आत्मा की ओर होता रहता है। इस प्रवाह को जैनी लोग 'आस्रव' कहते हैं। कर्मों के इस प्रवाह से आत्मा उनसे ढंकती जाती है और उनके बन्धन में फंसती जाती है। इस बन्धन से छुटकारा पाने के लिये दो कार्य आवश्यक है। पहला कार्य तो यह है कि नये कर्मों के प्रवाह को जीव की ओर आने से रोकना चाहिए। कर्मों के इस प्रवाह के रोकने को जैनी लोग 'संवर' कहते हैं। इस प्रवाह को संयम तथा सदाचार द्वारा रोका जा सकता है। दूसरा कार्य यह है कि जो कर्म जीव में प्रवेश कर गये हैं और उसे आच्छादित किये हैं इन्हें हटाना चाहिए। इन कर्मों को हटाने को जैनी लोग 'निर्जरा' कहते हैं। यह कार्य कठिन तपस्या द्वारा किया जा सकात है। अब उन उपायों पर विचार किया जायगा जिनके द्वारा मनुष्य कर्म के बन्धनों से मुक्त हो सकता है।

(६) सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन तथा सम्यक् चरित्र की आवश्यकता– जैनियों के विचार में आत्मा को कर्म के बंधन से मुक्त करने के लिए सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन तथा सम्यक् चरित्र की आवश्यकता है। इसे जैन–धर्म में 'त्रिरत्न' कहा गया है और जैनियों का कहना है कि अज्ञानता के कारण ही मनुष्य काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि के वश में हा जाता है। अतएव अज्ञानता को दूर करना नितान्त आवश्यक है। यह कार्य सम्यक ज्ञान प्राप्त करके किया जा सकता है। इसी से जैनी लोग ज्ञानार्जन पर बड़ा जोर देते है। सम्यक् ज्ञान के साथ–साथ सम्यक् दर्शन का भी होना आवश्यक है।

जैन तीर्थकरों में विश्वास रख ाना ही सम्यक् दर्शन है। सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् दर्शन के साथ–साथ सम्यक् चरित्र का भी होना आवश्यक है। सम्यक् चरित्र के लिये मनुष्य को अपनी इन्द्रियों, अपनी वाणी तथा अपने मों पर पूरा नियन्त्रण रखना चाहिये।

भाषा भी सरल लिखें तथा विषय भी सरल हो।

वर्ण-व्यवस्था के दोष

डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल

सैद्धान्तिक रूप में वर्ण–व्यवस्था के अनेक लाभ बताये जा सकते हैं। लेकिन इस व्यवस्था के व्यावहारिक रूप को देखने के बाद एक निष्पक्ष व्यक्ति के सामने तत्काल यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि जिस रूप में वर्ण–व्यवस्था हमारे समाज में प्रचलित रही, उस रूप में क्या इस व्यवस्था को न्यायपूर्ण, समतावादी और कल्याणकारी कहा जा सकता है? यद्यपि स्मृतियों पुराणों और ब्राह्मण ग्रन्थों में इस प्रश्न की आशंका पहले ही कर लिये जाने के कारण वर्ण–व्यवस्था को अलौकिक आधार पर स्पष्ट कर दिया गया लेकिन आज कोई भी शिक्षित और विवेकशील व्यक्ति एक सामाजिक व्यवस्था को अलौकिक आधार पर समझने की भूल नहीं कर सकता। अक्सर ऐसा समझ लिया जाता है कि वर्ण व्यवस्था सैद्धान्तिक रूप से दोषपूर्ण नहीं है बल्कि केवल व्यवहार में यह दोषपूर्ण बन गयी। यह केवल एक भ्रान्त–तर्क है। यदि सिद्धान्त को यवहार से पृथक कर दिया जाये तो सिद्धान्त की उपयोगिता ही क्या है? व्यावहारिक रूप से वर्ण–व्यवस्था में इतने दोष रहे हैं कि इसे किसी प्रकार भी उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। इसके कुछ निम्नांकित दोषों के विवेचन से हम वर्ण–व्यवस्था की दुर्बलताओं को सरलता से समझ सकते हैं।

(१) वर्ण–व्यवस्था नैतिकता के दोहरे स्तर पर आधारित है। इस आधार को कौन व्यक्ति न्यायपूर्ण कह सकता है कि जन्म के आधार पर ही कुछ व्यक्तियों को दूसरे से अधिक मूर्ख, अज्ञानी, अपवित्र सुस्त और दुर्गुणी मान लिया जाये। शास्त्रों में यह तर्क दिया गया है कि स्वभाव सम्बन्धी ये विशेषतायें (गुण) जन्मजात होती है और इसलिए विभिन्न वर्णों के अधिकार व कर्तव्य एक–दूसरे से भिन्न होना उचित है, लेकिन शास्त्रकारों ने जान–बूझकर इस तथ्य की अवहेलना की है कि जब सैकड़ों वार्षों की परम्परा में एक समूह एक विशेष प्रकार का व्यवसाय करता रहता है तो अपने द्वारा किये जाने वाले कार्यों और परिस्थिति सम्बन्धीकारणों से उसमें स्वयं एक विशेष प्रकार का स्वभाव अथवा गुण विकसित हो जाता है। इस प्रकार वर्ण–यवस्थास का आधार ही भेदभाव की नीति है।

(२) वर्ण–व्यवस्था एकाधिकार की सामाजिक नीति पर आधारित है। आरम्भ में शक्तिसम्पन्न व्यक्तियों ने सबसे अधिक अधिकार स्वयं प्राप्त कर लिए और बाद में किसी भी दूसरे समूह की उच्च स्थिति में जाने पर पूर्ण नियन्त्रण लगा दिये। यह स्थिति सामाजिक प्रगति में अत्यधिक बाधक सिद्ध हुई। इसी के फलस्वरूप भारतीय सामाजिक व्यवस्था में चेतना और जागरुकता का नितान्त अभाव हो गया।

(३) इस व्यवस्था के अन्तर्गत 'वर्ण–संकरता की धारणा' एक अत्यधिक संकीर्ण और पक्षपातपूर्ण मनोवृत्ति की परिचायक रही है। यह कहना कि एक–दूसरे से भिन्न वर्ण की स्त्री–पुरुष से उत्पन्न सन्तान वर्णसंकर होती है और इसलिए वह अपवित्र, प्रेरणारहित, प्रमादी और आलसी होती है, पूर्णतया निराधार है। इस विश्वास को जैवकीय सिद्धातों के द्वारा भी प्रमाणित नहीं किया जा सकता। यदि आर.एच. फैक्टर के आधार पर रक्त की पवित्रता का दावा किया जाये तो भी यह विश्वास किस प्रकार किया जा सकता है कि उच्च वर्ण के पुरुष और निम्न वर्ण की स्त्री का विवाह होना एक अक्षम्य अपराध है। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय के अधिकार–सम्पन्न व्यक्ति किसी भी धारणा को धर्म का जामा पहनाने के लिए तैयार थे; इससे समाज का संगठन कितना ही विषाक्त हो जाये, इसकी उन्हें चिन्ता नहीं थी।

(४) आज सभी विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि सामाजिक न्याय, समानता स्वतन्त्रता और सत्य सामाजिक व्यवस्था की स्थिरता के मूल आधार हैं; लेकिन वर्ण–व्यवस्था ने इन सभी मानवीय सिद्धान्तों की उपेक्षा की है। फिर इस व्यवस्था को किस प्रकार लोक–कल्याणकारी माना जा सकता है।

(५) वर्ण–व्यवस्था में समाज के एक बड़े वर्ग को 'शूद्र' और 'अन्त्यज' कहकर उसका जो अमानवीय शोषण हुआ है, वह न्याय के सभी सिद्धान्तों का नृशंस हनन है। इसके पश्चात् भी इसव्यवस्था को धर्म का अंग मानकर इसके आधार पर 'वण धर्म' का प्रतिपादन करना स्वयं हिन्दू धर्म को भी कलुषित करना है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि

वर्ण–व्यवस्था को किसी प्रकार भी एक न्याय पूर्ण व्यवस्था नहीं कहा जा सकता। यह केवल एक अन्यायपूर्ण नीति रही है जिसे अलौकिकता, धर्म और सिद्धान्त का जामा पहनाकर स्थिर बनाने का प्रयत्न किया गया। वर्ण–व्यवस्था के इन दोषों की गम्भीरता को देखने के बाद तत्काल एक–दूसरा प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि यदि वास्तव में यह व्यवथा इतनी दोषपूर्ण है तब यह व्यवस्था इतनी दीर्घजीवी कैसे रह सकी? वास्तव में, इस स्थिति को अनेक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा राजनीतिक कारणों के आधार पर समझा जा सकता है।

(१) वर्ण–व्यवस्था की स्थिरता का एक प्रमुख कारण यह रहा है कि इसके अन्तर्गत समाज के सर्वोच्च वर्ण ने केवल सामाजिक और धार्मिक अधिकारों पर ही एकाधिकार किया, राजनैतिक और आर्थिक अधिकारों पर नहीं। यद्यपि यह सच है कि हमारा समाज धर्मप्रधान रहा है, इसलिए सामाजिक और धार्मिक अधिकारों का महत्व ही सर्वोच्च था लेकिन राजनीतिक शक्ति और आर्थिक अधिकार क्रमशः क्षत्रियों तथा वैश्यों के पास रहने से आरम्भ में यह व्यवस्था उन्हें अपने लिए उपयोगी प्रतीत हुई और इस प्रकार उन्होंने इस व्यवस्था का अधिक विरोध नहीं किया। शूद्रों को इन तीनों वर्णों की सेवा करने का आदेश दिया गया, इसलिए बहुत समय तक तीनों उच्च वर्ण सामूहिक रूप से शूद्रों की स्थिति के प्रति आश्वस्त रहे। शूद्रों ने इस व्यवस्था का कभी विरोध न किया हो, ऐसी बात नहीं है, लेकिन उनके पास शिक्षा धर्म, प्रशासन और सम्पत्ति के अधिकार न होने से उनके विरोध का कोई मूल्य नहीं था। इस प्रकार यह विभाजन एक लम्बे समय तक स्थायी बना रहा।

(२) इस व्यवस्था की स्थिरता का दूसरा प्रमुख कारण ईसा से ६०० वर्ष पूर्व जैन और बौद्ध धर्मों का विकास होना था। यह धर्म स्वयं वर्ण–व्यवस्था के विरोध् से उत्पन्न हुए थे लेकिन इन्हीं के कारण वर्ण–व्यवसाा की स्थिरता को और अधिक प्रोत्साहन मिला। इसका कारण यह था कि इस समय तक वर्ण–व्यवस्था को पूर्णतया एक धार्मिक व्यवस्था के रूप में स्थापित किया जा चुका था। इस प्रकार व्यक्तियों को यह विश्वास दिलाया गया कि वर्ण–व्यवस्था के किसी भी विरोध से हिन्दू धर्म का पतन हो जायेगा।

(३) वर्ण–व्यवस्था की स्थिरता का एक प्रमुख कारण उच्च वर्णों के हाथों में ही धर्म तथा शासन के अधिकार का होना था। एक धर्म प्रधान समाज में राजा सदैव धर्मभीरू होता है। इस स्थिति के फलस्वरूप राज्य की वास्तविक शक्ति ब्राह्मणों के हाथों में ही सुरक्षित रही क्योंकि ब्राह्मण पुरोहित ही शासक वर्ग के सलाहकार रहे और उन्हीं ने व्यवहार के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। इसके अतिरिक्त धर्म के द्वारा राजा के अलौकिक अधिकारों की व्याख्या होने से क्षत्रिय भी इस व्यवस्था को अपने हित में देखते रहे और इस प्रकार उन्होंने इस व्यवस्था का कभी खुले रूप से विरोध नहीं किया। इससे स्पष्ट होता है कि धर्म और राजनीति के बीच एक निन्दनीय समझौता होने से भी वर्ण–व्यवस्था की अन्यायपूर्ण नीति इतने लम्बे समय तक प्रभावपूर्ण बनी रही।

(४) अन्त में यह स्वीकार करना पड़ेगा कि कर्मवाद, भाग्य, पुनर्जन्म और मोक्ष के विश्वासों ने इस व्यवस्था को सबसें अधिक स्थायित्व प्रदान किया। व्यक्ति को जब यह विश्वास हो गया कि पूर्वजन्म के बुरे कर्मों के फलस्वरूप उसे निम्न वर्ण की सदस्यता मिली है तब इस व्यवस्था का विरोध करके वह अपने आगामी जीवन को भी क्यों बिगाड़ता? विशेषकर, जब तक वर्ण–धर्म का पालन करना ही वास्तविकधर्म बन चुका हो। व्यक्ति की भाग्यवादी प्रवृत्ति ने उसे और अधिक निष्क्रिय बना दिया। सामाजिक चेतना के अभाव में किसी भी व्यवस्था का विरोध सम्भव नहीं होता। इसके फलस्वरूप वर्ण–व्यवस्था का विरोध होने का भी कोई प्रश्न नहीं उठता था। मोक्ष की धारणा ने जहाँ व्यक्ति को आत्म–विकास का अवसर दिया वहीं इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह हुआ कि इसके कारण व्यक्तिवादिता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने आप में ही सीमित रह गया, उसे अपने समूह के बारे में तथा सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था के बारे में विचार करने की चिन्ता ही नहीं रही। इस तरह जब प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे से पृथक् इकाई बन गया तब संगठित रूप से इस व्यवस्था का विरोध किस प्रकार किया जा सकता है?

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि वर्ण–यवस्था को स्थिर बनाये रखने में किसी अलौकिक शक्ति का हाथ नहीं था बल्कि सामाजिक और धार्मिक दशाओं के संयुक्त प्रभाव से ही यह व्यवस्था इतनी स्थिर रह सकी। इस स्थिति को सामाजिक उपयोगिता के आधार पर नहीं, बल्कि असमर्थता और

(शेष पृष्ठ १६ पर)

अजवाइन

अजवाईन मेदा (अमाशय) जिगर और आंतों की बहुत सी बीमारियों में लाभदायक है। जिगर की कमजोरी को दूर करती है, भूख लगाती है, भोजन को पचाती है, बायू को बाहर निकालती है, उफारे को दूर करती है और आंतों के कीड़ों को मारती है।

अजवाइन पांच तोले लेकर सात बार नीबू के रस में तर करें और सुरवाएं। इसके बाद इसमें सोंठ एक तोला और काला नमक एक तोला मिलाकर बारीक पीस छान कर रखें और तीन तीन माशा सुबह शाम गुनगुने पानी से भोजन पचाने के लिए खाना खाने के बाद इस्तेमाल करें।

कान में दर्द हो ता अजवाइन को तिलके तेल में पका कर हलका गर्म कान में टपकाने से दर्द दूर हो जाता है। अगर कान में फुंसी हो तो जल्द ही पककर फूट जाती है।

अगर जुकाम बन्द हो जाए और उसकी वजह से सिर में दर्द हो तो अजवाइन को एक पोटली में बान्धकर गर्म करके सूंघने से छींके आकर और नाक से पानी बहकर आराम आ जाता है। अजवाइन काली खांसी के लिए भी लाभदायक है।

अजवाइन एक तोला, काला नमक तीन माशा को बारीक पीस कर असली शहद चार तोला में मिलाकर दिन में तीन चार बार चोटें।

पुराने बलगमी बुखारों के लिए अजवाईन बहुत लाभदायक है। कभी--कभी मलेरिया बुखारों के बाद हलका हलका बुखार रहने लगता है। अजवाईन के इस्तेमाल से यह बुखार जल्द दूर हो जाता है। इस सूरत में मेदा, जिगर, तिल्ली या आंतों में सूजन हो जाती है तो वह भी जाती रहती है। इस्तेमाल का तरीका यह है कि अजवाइन एक तोला सुबह के समय मिट्टी के एक कोरे छोटे बरतन में भिगो रखें। दिन को छांव में और रात को ओस में रखें। दूसरे दिन उसका पानी छानकर पीएं। उसी तरह आठ दस दिन तक बराबर पीते रहें।

अजवाइन के इस्तेमाल से गुर्दा व मसाने की पत्थरी भी निकल जाती है। अजवाइन बिच्छू काटनें के लिए भी लाभदायक है। अजवाइन को पानी में पीसकर बिच्छू के डंक मारने की जगह पर लगाएं। अजवाइन का सत भी निकाला जाता है जो अंग्रेजी में "याईसोल" कहलाता है। इसके लाभ भी अजवाइन जैसे हैं लेकिन यह उससे अधिक असर करने वाला है। इसकी खूराक एक रत्ती से दो रत्ती तक है।

अदरक

अदरक भोजन को पचाने वाली है और भूख लगाती है। बादी बलगम को छांटती और वायू को निकालती है। जिन लोगों का मेदा कमजोर हो, खाना अच्छी तरह पचता न हो और रियाह अधिक पैदा होती हो उनको इसके इस्तेमाल से बहुत लाभ होता है। उरद की दाल, गोभी और अरवी जैसी बादी चीज़ों के साथ शामिल करने से उनका बादी पन दूर हो जाता है।

जाड़ों में अदरक को गुड़ में मिलाकर खाने से बदन में गर्मी पैदा होती है और सरदी कम लगती है।

उफार, पेट का दर्द, खांसी, दमा, गठिया जैसे बलगमी बीमारियों में इसके खाने से लाभ पहुंचता है, कब्ज़ भी दूर हो जाता है।

सर्दी से आवाज़ बैठ जाए तो थोड़ी सी अदरक नमक लगाकर खाने से खुल जाती है। संेदुर खाने से जो आवाज बैठ जाती है वह भी इसके खाने से ठीक हो जाती है। बलगमी खांसी और दमा में अदरक का रस तीन माशा असली शहद एक तोला में मिलाकर चाटने से लाभ होता है। भूख अच्छी तरह न लगती हो, पेट में वायू भरी हो, कब्ज़ रहता हो तो अदरक को छील कर छोटे–छोटे टुकड़े करें और नमक छिड़क कर खाएं भूख अच्छी तरह लगने लगेगी, वायू पास हो जाएगी और कब्ज़ जाता रहेगा।

गठिया और बाई के दर्दों को दूर करने के लिए इस का तेल बनाकर मालिश करने से लाभ होता है। अदरक का रस आधा किलो लेकर उसमें एक सो पचीस ग्राम तिल का तेल मिलाकर हलकी आंच पर पकाएं और यहां तक कि केवल तेल रह जाए। आवश्यकता के समय इस की मालिश करें।

अदरक का मुरब्बा बलगमी मिजाज वालों को और ठण्डे मिजाज वालों को बहुत मुफीद है। मालूम रहे कि अदरक ही को सुखाकर सोंठ बनाते है।

> जाति पात न पूछे कोए
> रब का भजे सो रब का होए

लेजर फेको

डा.एम.आर.जैन

एक वह जमाना था जब मोतियाबिंद के आपरेशन के बाद मरीज ७ से १० दिनों तक आंखों पर पट्टी बांधे रहता था और ४०–५० दिनों के बाद उसकी आंखों पर मोटेमोटे शीशों वाला चश्मा लगा दिया जाता था. मरीज को उस चश्मे से हर चीज करीब ३० प्रतिशत बड़ी दिखाई देती थी. दृष्टि क्षेत्र संकुचित हो जाता था और कभीकभी १ की २ चीज़ें भी दिखाई देती थीं.

ब्रिटेन के नेत्र चिकित्सक डा. हेरोल्ड रिडले ने १६४७ में लंदन में मोतियाबिंद आपरेशन के बाद उसकी जगह कृत्रिम लेंस का सफल प्रत्यारोपण कर नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में नया अध्याय लिखा. इसके बाद १६७४ तक कई नेत्र चिकित्सकों ने अलग–अलग आकार के कृत्रिम लेंस, जो एक विशेष प्रकार के प्लास्टिक 'पोली मिथयल मेथएक्राइलेज' के बने थे, का प्रयोग कर सफलता का प्रतिशत बढ़ाया. भारत में पहले फायड्रोव स्पूतनिक लेंस का सफल प्रत्यारोपण सवाई मानसिंह अस्पताल में वर्ष १६७६ में मैं ने स्वयं किया।

आधे लचकदार लेंस की बनावट में १६६० तक लगातार प्रगति होती गई. इन लेंसों को सहजता से आंख में प्रत्यारोपित किया जा सकता है एवं एक बार ठीक से प्रत्यारोपित हो जाने के बाद ये किसी प्रकार की तकलीफ भी पैदा नहीं करते. इस प्रकार प्रचलित लेंसों में प्रमुख थे सिंसकी, सीमकोय, शीयरिंग, फोकनर, मोडीफाइड जे व सी लूप आदि. इन लेंसों को पृष्ठकक्ष यानी जहां इनसान को वास्तविक लेंस रहता है वहीं प्रत्यारोपित किया जाता है.

आपरेशन के समय आंख में करीब १२ से १५ मिलीमीटर का बड़ा चीरा लगा कर लेंस के कठोर न्यूक्लियस को बाहर निकाला जाता है और उसकी जगह अल्ट्रासोनोग्राफीह द्वारा ज्ञात किया गया पूर्व निर्धारित डायप्टर का करीब ६.५० मिलीमीटर व्यास का थोड़ा लचकदार पोलीमिथाइल मेथएक्राइलेट का बना लेंस प्रत्यारोपित किया जाता है.

चीरा बड़ा होने से टांके लगाना जरूरी होता है व घाव भरने में करीब २० से ४० दिन लगते है।. इस आपरेशन के बाद अकसर १.५ से २.५ नंबर का दृष्टिदोष उत्पन्न होता है जिसके लिए चश्मा अत्यंत आवश्यक होता है. इस बेहद प्रचलित शल्य क्रिया को 'कनवेंशनल लेंस ट्रांसप्लांट' के नाम से जाना जाता है.

फेको पद्धति

आधुनिक फेको पद्धति में अत्यंत सूक्ष्म चीरा लगाकर छोटे आकार का बेहद मुलायम लेंस, जो 'फोल्ड' किया जा सके, आंख में प्रत्यारोपित किया जाता है. 'फेको' का अर्थ है लेंस. फेको विधि में आंख के अंदर अपारदर्शक लेंस (मोतियाबिंद) के ठोस न्यूक्लियस को पूरा न निकाल कर विदेशों से आयातित अत्यंत महंगी (करीब ४ से २० लाख रुपए) फेको मशीन से जुड़ी पेंसील (फेको प्रोब) द्वारा अल्ट्रासोनिक किरणों की मदद से न्यूक्लियस के कई सूक्ष्म टुकड़े कर उसको बाहर निकाला जाता है. मोतियाबिंद के खोल को, जो बेहद पतला व पारदर्शक होता है, अपनी जगह ही रहने दिया जाता है. इस आपरेशन में टांका लगाने की जरूरत नहीं होती.

इस विधि से आपरेशन के बाद मरीज ३–४ घंटों बाद स्वयं अपनी गाड़ी चला कर घर जा सकता है और एक सप्ताह बाद अपना सारा काम सुचारु रूप से कर सकता है.

क्या फेको सर्जरी हर मरीज में संभव है? इस सवाल के जवाब में मेरी राय है कि फेको सर्जरी के लिए यह बेहद जरूरी है कि मोतियाबिंद कच्चा हो. पका हुआ या ज्यादा पके हुए मोतियाबिंद में उसका –न्यूक्लियस' अत्यंत कठोर हो जाता है जिसके टुकड़े करने में अधिक 'फेको ऊर्जा' की जरूरत होती है जो आंख के अन्य हिस्सों को, खासकर 'कोर्निया' को नुकसान पहुंचाती है. इसके अलावा भी कई ऐसी स्थितियां हैं जिसमें फेको विधि उपयुक्त नहीं होती.

अगर कोई पूछे कि क्या ये कृत्रिम लेंस जीवन भर काम देते हैं? तो मैं कहूंगा कि कृत्रिम लेंस की उम्र करीब १०० वर्ष की है. अगर बच्चे की आंख में भी कृत्रिम लेंस लगाया जाए तो उसे जीवन भर बदलना नहीं पड़ता. करीब २० प्रतिशत लोगों में जिस झिल्ली (पोस्टिरिअर कैप्सूल) पर लेंस को टिकाया जाता है वह मोटी हो जाने से दृष्टि धुंधली होने लगती है. एक विशेष

प्रकार के लेजर, जिसे 'याग लेजर' कहते हैं, की सहायता से बिना कोई चीरा लगाए इस झिल्ली में कुछ ही क्षणों में छेद कर पूर्ण रोशनी पाई जा सकती है.

एक और जरूरी बात यह कि फेको पद्धति से लेंस डालने के बाद भी चश्मा पहनना जरूरी है, खासकर पढ़ने लिखने के लिए.

लेजर फेको अत्यंत आधुनिक नहीं है जबकि सोनिक्स व वाइट स्टार (हाइपर पल्स) फेको अत्यंत आधुनिक है. इनमें 'सोनिक' किरणों का प्रयोग किया जाता है.

आधुनिक चिकित्सक इस बात को जानने में लगे हैं कि मरीज के लेंस की खोज (कैप्सूल) से अपारदर्शक लेंस को निकाल कर उसी सूक्ष्म छिद्र द्वारा सिलिकोन का तरल पदार्थ उस खोल में भर कर बिलकुल नया और कभी न धुंधला पड़ने वाला ऐसा लेंस बनाया जा सके जिसके द्वारा बिना चश्मे के दूर व नजदीक सबकुछ पढ़ा जा सके.

विश्व भर में आज अल्ट्रासोनिक फेको द्वारा ही मोतियाबिंद का आपरेशन किया जाता है व विश्व के बेहतरीन फोल्डेबल लेंस भारत में उपलब्ध हैं. लेजर फेको बेहद महंगे हैं व उनके आम प्रचलन में अभी तक कई बाधाएं हैं. यह मिथ्या धारणा है कि लेजर द्वारा बिना चीरा लगाए मोतियाबिंद का इलाज संभव है. (सरिता के शुक्रिये के साथ)

(पृष्ठ ४० का शेष)

तक ठहरने की हज यात्रियों की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए यह रोक लगाई है। हालांकि ४० वर्ष से कम आयु के व्यक्ति अपने परिवार या सांगठित वैधानिक दल के साथ यहाँ आ सकते हैं। एक अधिकारी ने कहा कि यह फैसला सभी संबंधित पक्षों के साथ विचार–विमर्श के बाद लिया गया है।

वेनेजुएला ने किया अमेरिका साम्राज्य के अंत का आह्वान

तेहरान– अमेरिका के दो कट्टर आलोचकों ईरान और वेनेजुएला ने एक दूसरे को सहयोग देने तथा निवेश समझौतों पर जोर दिया है। वेनेजुएला के राष्ट्रपति हयूगो शावेज ने तेहरान विश्वविद्यालय में कहा कि अमेरिका यदि अपना प्रभुत्व दुनियाभर में जमाने में कामयाब हो जाता है तो मानवता का कोई भविष्य नहीं रहेगा। इसी वजह से हमें मानवता को बचाने तथा अमेरिकी साम्राज्य के अंत के लिए एक हो जाना चाहिए।

ब्लेयर के खिलाफ विद्रोह की स्थिति

लंदन मध्य ऐशिया संकट पर प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर के रवैये को लेकर उनके सहयोगी ही उनसे खफा हो गए हैं। उन्हें अपनी कैबिनेट के सदस्यों का विद्रोह का सामना करना पड़ रहा है। हाउस ऑफ कॉमन के नेता जैक स्ट्रा का कहना है कि लेबनान पर इजराइली हमला बहुत अधिक कड़ी कार्रवाई है।

पूर्व विदेश मंत्री जैक स्ट्रा ने कहा इजराइल को लेबनान सरकार पर हमले जारी रखने की छूट देना मध्य एशिया में फिर से युद्ध की विभिष्ज्ञिका व आतंकवाद को बढ़ावा देने के समान है। उन्होने कहा कि हिज्जबुल्ला गुरिल्लाओं के खात्में के बहाने लेबनानी मुल्क पर हमला नहीं किया जा सकता। जैक स्ट्रा ने कहा कि हालांकि इजराइल को अपने यहां आतंकी हमलों से बचाव को पूरा अधिकार है। इजराइल के युद्ध पीड़ितों के प्रति भी सहानुभूति व्यक्त की जा सकती है। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि लेबनान के निर्दोष नागरिक इस हमले से मारे जा रहे हैं।

अवध के बादशाहों की तख्त नशीनी (राज्यरोहण)

नाम	सन्
सआदत खां बुर्हानुलमुल्क	१७११
अबुल मन्सूर सफदर गंज	१७३६
शुजाउद्दौला	१७७५
आसिफुद्दौला	१७७५
वजीर अली खां	१७६८
सआदत अली खां	१७६८
गाजियुद्दीन हैदर	१८१४
नसीरूद्दीन हैदर	१८२७
मुहम्मद अलीशाह	१८३७
अमजद अली शाह	१८४२
वाजिद अली शाह	१८४७
जब्तीय सल्तनत	१८५६
अवध राज्य प्रत्याहार	१८५६

अल्लाह जिसे चाहता है मुल्क का हाकिम बनाता है जिससे चाहता है मुल्क ले लेता है, जिसे चाहता है इज्जत देता है और जिसे चाहता जलील कर देता है।

Mob. 9335384273
Noor Ahmad 0522-2005079
Prop. 2273297

Haji Noor Ahmad Jewellers

143/75, Joote Wali Gali,
Behind Mumtaz Market,
Aminabad, Lucknow

रोज़ा, ज़कात और फ़ित्रा

मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी से लाभान्वित

मुसलमानो! तुम्हारे ऊपर रोज़े उसी तरह फ़र्ज़ किये गये जिस तरह तुम से पहले दूसरी उम्मतों पर फ़र्ज़ किये गये थे। (पवित्र क़ुर्आन २:१८३)

– रमज़ान का रोज़ा स० २ हिज्री में फर्ज हुए हर आक़िल, बालिग़ साहिबे ईमान मर्द व औरत पर रमज़ान के महीने के रोज़े फ़र्ज़ हैं।

– इस की फ़र्ज़ियत का इन्कार करने वाला काफ़िर और शरअ़ी उज़्र के बिना छोड़ने वाला सख़्त गुनहगार फ़ासिक़ है।

– चान्द देख कर रोज़ा रखो और चान्द देखकर रोज़ा तोड़ो (बुख़ारी व मुस्लिम)

– शअ़बान की २६ तारीख़ को चान्द देखने की कोशिश करना मुसलमानों पर वाजिब है।

– अगर मतलअ़ (चान्द दिखने की जगह) साफ़ न होने के सबब आ़म तौर से चान्द न देखा जा सके और एक नमाज़ी परहेज़गार मुसलमान मर्द या औरत ने चान्द देखा हो तो रमज़ान के चान्द में उनकी गवाही मान कर रोज़ा रखना शुरूअ़ कर दिया जाएगा अलबत्ता ईद के चान्द में मतलअ़ साफ़ न होने की सूरत में दो परहेज़गार मुसलमान मर्दों की गवाही मानी जा सकेगी। (आज कल मोटर गाड़ियों और कारख़ानों के सबब आमतौर से मतलअ़ कसाफ़त आलूद (प्रदूषण युक्त) रहता है।) (अनुवादक)

– रोज़े का वक़्त सुब्हे सादिक़ से ग़ुरूबे आफ़ताब तक है।

– रोज़े के लिए नीयत ज़रूरी है बे नीयत रोज़ा न होगा।

– रमज़ान के रोज़े की नीयत मग़रिब (सूरज डूबने के बअ़्द) से सुब्ह् ज़वाल से पहले तक की जा सकती है।

– रोज़े की नीयत से सह़री (पिछली रात का खाना) खाने से भी नीयत हो जाएगी।

–नीयत में यह ज़रूरी है कि दिल में इरादा कर ले कि आज मैं रोज़ा रखूंगा।

–जबान से नीयत जरूरी नहीं है लेकिन अगर कहना ही चाहे तो दिल के इरादे के साथ कह ले कि आज मैं रोज़ा रखूंगा।

– हर रोज़े की नीयत रोज़ाना करना होगी। (कई दिन के रोज़ों की नीयत एक साथ नहीं हो सकती (अनुवादक) रोज़ा रखने के लिए सह़री खाना सुन्नत है।

–सफ़र के सबब रोज़ा न रख सके तो इजाज़त है कि रोज़ा न रखे। (लेकिन बअ़्द में उस की क़ज़ा करे)।

– मुसाफ़िर अगर रोज़ा रख सकता है तो रखे। (इस दौर में रमज़ान में सफ़ारत व मुह़स्सिली करने वाले लगभग सभी उ़लमा रोज़ा रखते हैं।)

– ऐसा मरीज़ जिस को रोज़ा रखने से मरज़ बढ़ जाने का ख़तरा हो वह रोज़ा छोड़ सकता है। (बअ़्द में क़ज़ा करे)

– ह़ामिला (गर्भित) और दुध पिलाने वाली औरत भी रोज़ा न रख सके या रोज़ा रखने से ह़म्ल को नुक़्सान का ख़तरा हो या दूध पिलाने वाली औ़रत के दूध पीते बच्चे के लिए नुक़्सान या ज़हमत हो तो रोज़ा छोड़ सकती है। (बअ़्द में क़ज़ा करे)।

– हैज़ (रज) व निफ़ास (प्रसव रक्त) वाली औ़रतें रोज़ा नहीं रख सकतीं पाक होने पर छूटे रोज़े पूरे करें।

– रमज़ान का रोज़ा रखकर अगर शरअ़ी उ़ज़्र के बिना रोज़ा तोड़ दिया तो बड़ा गुनाह किया उस रोज़े की क़ज़ा भी करना होगी और कफ़्फ़ारा भी देना होगा। उस का कफ़्फ़ारा यह है कि ग़ैरे रमज़ान में ६० रोज़े लगातार रखे अगर बीच में रोज़ा टूट गया तो फिर से शुरूअ़ कर के ६० रोज़े लगातार रखे हैज़ वाली औ़रत हैज़ के दिनों के नाग़ों के आगे मिलाकर ६० रोज़े पूरे करे उसको दोबारा ६० रोज़े लगातार न रखने होंगे।

हम को बहुत होशयार रहना चाहिए और कफ़्फ़ारे की सूरत न पैदा होने देना चाहिए।

रोज़ा तोड़ने का शरअ़ी उ़ज़्र

रोज़े की ह़ालत में इतनी ज़ियादा प्यास लगे कि पानी न पीने से जान जाने का ख़तरा पैदा हो जाएगा इतनी ज़ियादा भूख हो कि न खाने से, जान जाने का ख़तरा हो जाएगा भूख प्यास की तेज़ी से किसी मरज़ के बढ़ जाने का अन्देशा हो या किसी नये मरज़ के पैदा हो जाने का ख़तरा हो जाए तो इन ह़ालतों में रोज़ा तोड़ देना शरअ़न जाइज़ है। कोई ऐसा तक्लीफ़ देह मरज़

हो गया कि तक्लीफ़ बर्दाश्त नहीं होती और दवा खाए बिना तकलीफ़ जा नहीं सकती तो रोज़ा तोड़ कर दवा खा लें। किसान या मज़दूर ने धूप में सख़्त मेह्नत की और प्यास इतनी बढ़ गई कि पानी न पीने से जान पर आ बनेगी तो रोज़ा तोड़ दे। हामिला (गर्भित) औरत ने रोज़ा रखा भूख प्यास से हालत ख़राब होने लगी तो रोज़ा तोड़ दे। दूध पिलाने वाली औरत ने रोज़ा रखा लेकिन रोज़े के सबब उस को या उसके बच्चे को सख़्त तक्लीफ़ होने लगी तो रोज़ा तोड़ दे।

उन तमाम सूरतों में जिन में रोज़ा तोड़ने की शरअन इजाज़त है बअ्द में उनकी क़ज़ा ज़रूरी है।

नीचे लिखी बातों से रोज़ा टूट जाता है और उसकी क़ज़ा ज़रूरी होती है

रोज़ा याद था मगर कुल्ली करते वक़्त पानी हल्क़ के नीचे चला गया।

– किसी ने ज़बरदस्ती रोज़ेदार को कुछ खिला पिला दिया।

– कोशिश करके क़ै (उल्टी) की और वह मुंह भर कर थी।

– कोशिश कर के क़ै की जो ज़रा सी थी और वह उसको निगल गया।

– जो चीज़ें खाई नहीं जातीं जैसे कंकर पत्थर वग़ैरा और रोज़ेदार उन को खा गया।

– दान्तों में फंसा गोश्त या कोई खाना ख़िलाल करते वक़्त अन्दर ही अन्दर वह हल्क़ से नीचे उतर गया जो चने के बराबर था, अगर चने से छोटा था तो रोज़ा न टूटेगा। अगर दान्त में फंसा खाना मुंह के बाहर आ गया और फिर निगल लिया गया तो रोज़ा टूट जाएगा चाहे वह चने से छोटी मिक़्दार का हो। नाक में दवा डालना।

– कान में तेल, पानी या दवा डालना। सहरी का वक़्त निकल गया लेकिन समझा कि अभी वक़्त है और सहरी खा ली बाद में मअ्लूम हुआ कि वक़्त न था तो रोज़ा टूट गया।

– ग़ुरूब नहीं हुआ मगर समझा कि ग़ुरूब हो गया और इफ़तार कर लिया बअ्द में मअ्लूम हुआ कि ग़ुरूब से पहले इफ़तार किया यह रोज़ा टूट गया। दोपहर तक रोज़े की नीयत न की ज़वाल के बअ्द नीयत की तो रोज़ा टूट गया। इन तमाम सूरतों में हर एक के बदले ग़ैर रमज़ान में रोज़ा रखना होगा।

क़ज़ा व कफ्फ़ारा दोनों

– रमज़ान का रोजा रख कर कस्दन कोई रोजा तोड़ देने वाला काम करने से उस की क़ज़ा भी करना होती है और कफ़्फ़ारा भी देना होता है जैसे किसी ने रोज़े की हालत में जान बूझ कर खा पी लिया या औरत को इस्तिअ्माल कर लिया तो उस रोज़े की क़ज़ा भी करना होगी और कफ़्फ़ारा भी देना होगा। अगर एक ही रमज़ान में कफ़्फ़ारा वाले दो चार रोज़े तोड़ दिये तो क़ज़ा तो सब की करना होगी मगर कफ़्फ़ारा एक ही देना होगा। कफ़्फ़ारे के रोज़ों का बयान ऊपर आ चुका, अगर कोई शख़्स साठ रोज़े लगातार रखने की सकत न रखता हो वह साठ मिस्कीनों को दोनों वक़्त पेट भर खाना खिलाए या एक मिस्कीन को साठ दिन तक दोनों वक़्त खाना खिलाए या साठ मिस्कीनों को अलग अलग हर एक को एक किलो ५६३ ग्राम गेहूं या उसकी कीमत अदा करे या एक मिस्कीन को साठ दिन तक रोज़ाना एक किलो ५६३ ग्राम गेहूं या उसकी क़ीमत अदा करे, एक मिस्कीन को इकट्ठा साठ दिन का गेहूं या उसकी क़ीमत देने से कफ़्फ़ारा अदा न होगा।

– इंजेक्शन लगवाने से रोज़ा नही टूटता है।

– गुलूकोज़ चढ़ाने या खून चढ़ाने से रोज़ा नहीं टूटता।

– आंखों में सुर्मा, काजल लगाने या दवा डालने से रोज़ा नहीं टूटता।

–सर में तेल लगाने से रोज़ा नहीं टूटता।

नीचे लिखी बातों से भी रोज़ा नहीं टूटता

भूल कर खाने पीने या कोई भी रोज़ा तोड़ने वाला काम भूल कर करने से।

खुद ब खुद क़ै होने से कम हो या ज़ियादा।

बे इरादा धुंवा या मक्खी हल्क़ से नीचे उतर जाने से।

सोते में इह्तिलाम (स्वप्न दोष) हो जाने से।

मिस्वाक करने से, सूखी हो या गीली, और चाहे जिस वक़्त की जाए।

रोज़े मना हैं –

साल में पांच दिन रोज़ा रखना हराम है, पहली शव्वाल और १०, ११, १२, १३ ज़िल्हिज्जा

तरावीह :

रमजान के महीने में इशा के फ़र्ज़ों और दो सुन्नतों के बअ्द २० रकअ़त तरावीह की नमाज़ पढ़ना सुन्नते मुअक्किदा है।

– यह नमाज़ जमाअ़त से दो–दो रकअ़त करके अदा की जाए, हर चार

रकअ़तों के बअ़्द ज़रा ठहर जाया जाए इस को तरवीहा कहते हैं।

– रमज़ान में तरावीह़ के बअ़्द वित्र जमाअ़त से पढ़ी जाती है। तरावीह़ की नमाज़ में पूरा क़ुर्आन मजीद सुनना सुन्नते मुअक्किदा है। लेकिन अगर ह़ाफ़िज़ न मिल सके तो छोटी–छोटी सूरतों से या मुख़्तलिफ आयात से २० रकअ़त पूरी करे। तरावीह़ में क़ुर्आने मजीद ख़त्म के दिन ह़ाफ़िज़ साह़िब को हदिये (उपहार) के तौर पर कुछ पेश करना जाइज़ है लेकिन उजरत तै करके तरावीह़ पढ़ाने वाले ह़ाफ़िज़ के पीछे तरावीह़ न पढ़ें। किसी मजबूरी के सबब अगर तरावीह़ की जमाअ़त में शरीक न हो तो घर बाज़ार जहां भी हो तरावीह़ की नमाज़ अदा करें।

तरावीह़ में इतनी तेज़ी से क़ुर्आन पढ़ना कि अल्फ़ाज़ व ह़ुरूफ़ समझ में न आवें दुरूस्त नहीं है। तरावीह़ में इतनी मिक्दार (मात्रा) में क़ुर्आन पढ़ना जिससे मुक़तदियों को तक्लीफ़ पहुंचे दुरुस्त नहीं है। ख़त्म की रात मिठाई तक़्सीम करने को ज़रूरी कर लेना बिदअ़त है।

ज़कात व फ़ित्रा

रमज़ान के महीने में इबादतों का सवाब सत्तर गुना बढ़ा दिया जाता है इस लिये जो लोग रमज़ान में ज़कात निकालने का इहतिमाम करते हैं वह बड़े खुश क़िस्मत हैं।

ज़कात साह़िबे निसाब पर फ़र्ज़ है। जिसके पास ६१२ ग्राम चांदी या ८७ ग्राम सोना हो वह साह़िबे निसाब है। किसी के पास चान्दी और सोना दोनों हैं और दोनों की क़ीमत ६१२ ग्राम चांदी के बराबर या ज़ियादा है वह भी साह़िबे निसाब है। जिस के पास न सोना है न चान्दी लेकिन ६१२ ग्राम चान्दी की कीमत के नक्द पैसे हैं वह भी साह़िबे निसाब है।

साह़िबे निसाब पर ज़कात फ़र्ज़ है, फ़ित्रा वाजिब, बकरअ़ीद में क़ुर्बानी वाजिब है। शरीअ़त की निगाह में वह मालदार है। वह सदक़ा और ज़कात नहीं ले सकता है। साह़िबे निसाब के माल पर साल गुज़र जाए तो वह ह़िसाब कर के अपने माल का चालीसवां ह़िस्सा यअ़्नी चालीस में से एक (ढाई फीसद) ज़कात निकाल कर ज़कात के मुस्तह़क़्क़ीन को पहुंचाएं। तिजारती माल का भी ह़िसाब कर के ज़कात निकाले। बेहतर यह है कि साल का कोई महीना मुक़र्रर कर ले और उसी में ज़कात का ह़िसाब करे और रमज़ान का महीना ज़कात निकालने के लिए बेहतरीन महीना है।

फ़ित्रा : हर साहिबे निसाब पर ईद के दिन फ़ित्रा निकालना वाजिब है। लेकिन कुछ लोग ईद से दो चार रोज़ पहले ही अदा कर देते हैं और सत्तर गुना सवाब लेते हैं। फ़ित्रा हर आ़क़िल बालिग़ साह़िबे निसाब पर अपनी जानिब से और अपनी ना बालिग़ औलाद की जानिब से वाजिब है। बीवी और बालिग़ औलाद अगर साह़िबे निसाब हों तो अपना फ़ित्रा वह ख़ुद अदा करें लेकिन अगर कोई शख़्स अपनी बीवी और बालिग़ औलाद की जानिब से फ़ित्रा अदा करे तो अदा हो जाएगा।

फ़ित्रे की मिकदार :

अह़नाफ़ के नज़दीक एक आदमी का फ़ित्रा एक किलो ५६३ ग्राम गेहूं या उसकी क़ीमत अदा करना है। फ़ित्रे का ह़िसाब साअ़ से लगाया जाता है, एक साअ १०४० दिर्हम का होता है और एक दिर्हम सत्तर जौ के बराबर होता है। जौ से साअ़ का ह़िसाब निकालने में इख़्तिलाफ़ हुआ है लिहाज़ा मालदार लोग लिखी मिक्दार (मात्रा) से बढ़ा कर अदा करें तो बेहतर होगा। अ़रब मुल्कों में तो पहले भी था और अब भी साअ़ की एक माप मौजूद है। उसी से फ़ित्रा निकालते हैं।

मस्तह़िक़्क़ीने ज़कात व सदका:

जो शख़्स साह़िबे निसाब नहीं है वह मिस्कीन है ज़कात व सदक़ात का मुस्तह़िक़ है। लेकिन अपने फ़ुरूअ़ यअ़्नी औलाद और औलाद की औलाद (पोते पड़ पोते, नवासे, नवासी आदि) उसूल यअ़्नी बाप दादा मां, दादी, पर दादी, नाना पर नाना, नानी पर नानी आदि को ज़कात नहीं दे सकते चाहे वह मिस्कीन हों, इनको अपनी कमाई से ख़र्च दीजिए, इन का रोटी कपड़ा तो आप के ज़िम्मे है। इसी तरह़ सादात को ज़कात व सदक़ात नहीं दे सकते, इनकी भी ख़िदमत अपनी ख़ास कमाई से कीजिए। अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ दे तो रमज़ान में ज़कात व सदक़ात के अ़लावा भी ख़र्च करें आप कर सकें तो अपने ग़रीब भाइयों को इफ़्तार व सह़र में मदद दें।

ईद :

२९ रमज़ान को अगर चान्द दिख गाय तो उस के दूसरे रोज़ वरना ३० के बाद का दिन ईदुल फ़ित्र का दिन कहलाता है। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मुसलमानों को साल में दो दिन ख़ुशी मनाने के लिए दिये गये हैं वह हैं यकुम शव्वाल और १० ज़िलह़िज्जा लेकिन मुसलमानों की ख़ुशी भी इबादत होती है। ईद के रोज़ बहुत सवेरे उठना,

(शेष पृष्ठ २२ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

● कोएती चुनाव कमीशन के आंकड़ों के अनुसार वोटरों की कुल संख्या ३४०२२४८ थी जिनमें से २२३१७८ थी औरतों की संख्या १६५६१० थी। इस चुनाव में सुधारवादियों ३५ सीटें जीतीं उनमें १८ सीटें इस्लाम विचारधारा वालों की ६ इस्लामी दस्तूर तहरीक से संबन्ध रखने वालों की और सलफी यूनीयन और २ सलफी आन्दोलन से संबन्ध रखती हैं।

और २ शीयी तहरीक और ६ का संबन्ध स्वतंत्र इस्लामी जमात से है। बीकी १७ सीटें स्वतंत्र विचारधारा और अवामी यूनियन ने हासिल कीं। विचाराधीन बात यह है कि औरतों को कोई सीट नहीं मिली जबकि उनका अनुपात ७५ प्रतिशत था। इस चुनाव के नतीजे से दो बातें खुलकर सामने आ गईं कि एक इस्लामी रुजहान रखने वालों की कामयाबी, दूसरे मीडिया औरतों के सिलसिले में अधिकार हनन का रोल अदा कर रहा था। जो गलत साबित हुई। इस चुनाव में देखने की बात यह थी कि अगर औरतों पर अत्याचार हो रहा था तो औरतों की इतनी बड़ी संख्या के सम्मिलित होने के बावजूद एक भी सदस्य औरत कामयाब न हुई। इससे यह बात समझ में आती है कि खुद औरतें राजनीति में आने के लिए गम्भीर न थीं। इस्लामी विचार रखने वालों की सफलता संतोषजनक है। इस चुनाव में उन्होंने ६ सीटें हासिल की हैं जबकि पिछले चुनाव में उनकी संख्या २ थी।

● राकेट तकनीक के जनक थे टीपू सुल्तान

कर्नाटक। वर्ष १७६२ में श्रीरंगपट्टनम के युद्ध में अंगेजों को जबरदस्त टक्कर देने वाले मैसूर के शासक टीपू सुल्तान पूरी दुनिया में राकेट तकनीक को आविष्कार करने वाले पहले व्यक्ति थे।

ब्रह्मोस एरोस्पेस के मुख्य प्रबंध निदेशक शिवथानु पिल्लई ने टीपू सुल्तान के महल दरिया दौलत में पत्रकारों से कहा कि टीपू और उसके सहयोगियों द्वारा निर्मित और २५० मिली मीटर का राकेट युद्ध में प्रयोग किए जाने वाला दुनिया का पहला राकेट था।

श्री पिल्लई ने कहा कि इस राकेट में दो किलोग्राम गन पाउडर भरा जाता था और इसे तलवार की धार के मार्ग निर्देशन में १.५ किलोमीटर से लेकर दो किलोमीटर दूर तक छोड़ा जा सकता था। उन्होंने कहा कि यह राकेट तकनीक की शुरुआत थी और इस क्षेत्र में ग्रामीणों, टीपू और उनके सहयोगियों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। श्री पिल्लई ने कहा, आश्चर्य होता है कि यह मूलभूत विचार उनके दिमाग में कैसे आया। हमारी राकेट और मिसाइल तकनीक वास्तव में उसी सिद्धांत पर आधारित है। उन्होंने कहा कि भारत में टीपू के राकेटों का कोई अवशेष नहीं बचा है। मैंने लंदन स्थित वूलविच आर्टिलरी म्यूजियम में इस्तेमाल किए गए राकेटों के अवशेष देखेंहै और मैं राष्ट्रपति को बताऊँगा कि उस समय के लोग कितने खोजी प्रवृत्ति के थे।

● बहरीन में पहली महिला न्यायधीश

खाड़ी देशों में बहरीन ऐसा पहला देश बन गया है जहाँ पहली बार कोई महिला न्यायाधीश जैसी महत्वपूर्ण कुर्सी संभालेगी। बहरीन के शाह हमाद बिन ईसा अल खलीफा ने मोना जेसेम अल क्वारी को सिविल कोर्ट का न्यायाधीश नियुक्त किया। नियुक्ति के बाद मोना ने कहा कि बहरीन की प्रथम महिला न्यायधीश होने पर उन्हें बेहद गर्व हैं। मोना अन्य खाड़ी देशों में भी पहली महिला न्यायाधीश बनी हैं।

● चालीस से कम उम्र और अकेले हैं तो नहीं मिलेगा हज वीजा–भारत

हज पर जाने वाले भारतीयों को मक्का जाने से पहले सऊदी अरब सरकार के निर्देशों पर विशेष ध्यान देना होगा क्योंकि वहाँ के प्रशासन ने ४० वर्ष से कम आयु के अकेले हज यात्रियों को वीजा जारी करने पर रोक लगा दी है।

सऊदी अरब के प्रमुख अखबार अरब न्यूज ने बुधवार को यह जानकारी दी। सऊदी अरब सरकार ने वहां निर्धारित समयावधि से अधिक दिनों

(शेष पृष्ठ ३६ पर)